सक्सेस एंड एबिलिटी

ABILITY

विकलांगों के प्रतिभा की दिशा में

मार्च 2020

कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स 2020

इस अंक में

04

आवरण कथा

भुवनेश्वरी महालिंगम के साथ 18 वें कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स 2020 की चमक और भव्यता का अनुभव करें। वह आपको एक ऐसे चमकीला उत्सव के बारे में बताती है जिसमे वास्तविक जीवन के पाँच नायकों - अनिंद्या भट्टाचार्य, स्वर्णलता.जे, आदिल मोहम्मद नजीर अंसारी, टिन्केश और रक्षिता राजू के उपलब्धि का जश्न मनाया गया।

33

एंप्लॉयबिलिटी

एंप्लॉयबिलिटी 2019 एक ऐसा कार्यक्रम था जिसके दौरान कई करियर बने, नेटवर्क स्थापित हुआ और क्षितिज का विस्तार हुआ। इस कार्यक्रम की सफलता, इसके विकास और वर्षों से इसका प्रभाव के बार में बात करते समय, इस बात पर भी विचार करते हैं कि कॉर्पोरेट कार्यबल में विकलांग व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व आज भी अपर्याप्त क्यों है।

हम आपसे सुनना चाहते हैं

चाहे आप विकलांग व्यक्ति हों, या माता-पिता या मित्र या कोई भी जो परवाह करता हो, हम आपके विचारों को जानने के लिए तत्पर हैं।

आप बस एक **क्लिक** की दूरी पर हैं!

संपादक	जयश्री रवींद्रन
प्रबंध संपादक	जानकी पिल्लई
उप संपादक	हेमा विजय
सहायक संपादक & डिज़ाइनर	श्रुति .एस. राघवन
हिंदी अनुवाद	मालिनी. क

संवाददाता
अनंतनाग: जावे द अहमद तक +911936 211363
हैदराबाद : साई प्रसाद विश्वनाथ +91810685503
भुवनेश्वर : डॉ. श्रुति मोहपात्रा +916742313311
दुर्गापुर : अग्शु जज ोडिया +919775876431
गुरुग्राम : सिद्धार्थ तनेजा +919654329466
पुणे : साज़ अगरवाल +919823144189 संदीप कनाबा र +919790924905
बैंगलोर : गायत्री किरण +919844525045 अली ख्वाजा +9180 23330200
यु.इस.ऐ : डॉ. मदन वसिष्टा +1(443)764-9006

प्रकाशक : एबिलिटी फाउंडेशन संपादकीय कार्या लय : नया न. 23, 3rd क्रॉस स्ट्रीट , राधाकृष्णन नगर, तिरुवान्मयूर, चेन्नई , इंडिया फ़ोन/फैक्स : 91 44 2452 0016 / 2440 1303. ऐबिलिटी फाउंडेशन की ओर से जयश्री रवींद्रन द्वा रा प्रकाशि त, इ- मेल: magazine@abilityfoundation.org

Rights and permissions: No part of this work may be reproduced or transmitted in any form or by any means, without the prior written permission of Ability Foundation. Ability Foundation reserves the right to make any changes or corrections without changing the meaning, to submitted articles, as it sees fit and in order to uphold the standard of the magazine. The views expressed are, however, solely those of the authors.

R.No. 66062/96

CavinKare
16 வகை
அனைத்தும் சிறந்த சுவை
உங்கள் உணவை மேலும் சிறப்பாக்க,
நாங்கள் ஆவக்காய், தொக்கு, எலுமிச்சம்,
பூண்டு, தக்காளி, இஞ்சி போன்ற 16
சிறந்த ஊறுகாய் வகைகள் தருகிறோம்.
அத்தனையும் ருசித்திடுங்கள்.
Ruchi
MANGO GINGER PIC
MANGO AVAKKAI PICK
LIME PICKLE
MANGO THOKKU PICKLE
T MANGO PICKLE
GARLIC PICKLE
EEN CHILLI PICKLE

पाँच सितारें

भुवनेश्वरी महालिंगम कहती है कि 18 वें कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स 2020 के भव्यता में भाग लेना एक अद्भुद अवसर है। यह पाँच सितारों का जश्न मानाने का चमकीला उत्सव था। अनिंद्या भट्टाचार्य, स्वर्णलता.जे, आदिल मोहम्मद नजीर अंसारी, टिन्केश और रक्षिता राजू, इन पाँच प्राप्तकर्ताओं को स्पेशल रिकग्निशन , एमिनेंस और मास्टरी की श्रेणियों के तहत सम्मानित किया गया ।

एबिलिटीफेस्ट 2019 के प्रभाव से मंत्रमुग्ध, सक्सेस & एबिलिटी से आकर्षित, एम्प्लॉयबिलिटी 2019 से विस्मित, एबिलिटी फाउंडेशन के साथ बीते हर क्षण मेरे लिए प्रेरणादायक रहे हैं। राजतोत्सव की ओर बढ़ते उनका कदम, एबिलिटी फाउंडेशन के उपलब्द्धि का एक और शानदार मिसाल है। एबिलिटी फाउंडेशन विश्व स्तरीय परिणाम देने के लिए समृद्ध प्रक्रियाओं, ठीक समन्वय और टीम की पूरी उपस्थिति को संमिलित करता है। कार्यक्रम के मेज़बान उत्कृष्ट टीम के सदस्यों, भागीदारों, शुभचिंतकों और स्वयंसेवकों ने उस शाम दर्शकों के लिए एक अद्भुत अनुभव प्रदान किया।

जैसा कि एबिलिटी फाउंडेशन के संस्थापक निदेशक जयश्री रवेन्द्रन ने कहा, हम भारतीयों के बीच, हेलेन केलर की तरह अनिंद्या का नाम क्यों प्रचलित नहीं है? निश्चित रूप से, हमारे बीच और कई बधिरान्ध हीरो हैं जिन्होंने शानदार काम किया है, और उन्हें हेलेन केलर की तरह पहचाने जाने की आवश्यकता है। इसी तरह, स्वर्णलथा

की बात सुनते हुए, मैं अपर्याप्त, अनभिज्ञ महसूस करती हूँ क्योंकि मैंने पाकिस्तान के व्हीलचेयर सक्रियतावादी मुनिबा मजारी के वीडियो की इतनी बार देखी है कि मैं इसकी गिनती भूल गयी हूँ , लेकिन मैंने स्वर्णलता के बारे में, सोशल मीडिया में नहीं देखा। मुझे लगा कि एक कार्यकर्ता के रूप में, एक माँ के रूप में, एक पत्नी के रूप में और कोयम्बटूर की एक अनुकरणीय महिला के रूप में, स्वर्णलता का सोशल मीडिया में अधिक मौजूदगी का हक है। टिंकेश को हर युवा के फिटनेस आइकन होने का हक है। वे हर 'एड्रेनालाईन उत्साही' की प्रेरणा स्रोत हैं। आदिल अपने आंतरिक आवाज़ की शक्ति के बारे में बात करते हैं जिसने न केवल उसकी सोच बल्कि उसके पूरे जीवन को बदल दिया। उन्होंने खुद के लिए असंभव रिकॉर्ड कायम करने का लक्ष्य निर्णय किया और तीरंदाजी में भारत के लिए पदक दिला रहे हैं, जो स्पष्ट रूप से उनके लिए चमत्कार है। रक्षिता एक शानदार खिलाड़ी और जन्मजात एथलीट है, जिसके प्रतिभा को उनके दादी, भाई, परामर्शदाता, मार्गदर्शक और समर्थक ने पहचाना और समर्थन किया। वह हमे दिखती हैं कि कुछ भी न होने के बावजूद - चाहे वह माता-पिता हो या पैसा - कोई कितना कुछ हासिल कर सकता है। रक्षित की "थैंक यू! थैंक यू!" शाम का सबसे प्यारा पल था।

एबिलिटी फाउंडेशन हर बार अपने लिए उच्च लक्ष्य निर्णय करते हैं और हर बार उससे कहीं अधिक प्राप्त करते हैं । यह गुण पुरस्कार के प्रत्येक प्राप्तकर्ता में देखने को मिलती है। उनकी उपलब्धियाँ उनकी विकलांगता या दूसरों की क्षमताओं से आगे बढ़ने के लिए नहीं , बल्कि उनके अपने आत्म विश्वास से परे जाना है। खुद पर विश्वास करते हुए, खुद के क्षमता और शक्ति को पहचानते हुए, सभी अपेक्षाओं को पार करते हुए वे अपनी सलाखों को पार उत्कृष्ट कलाकार के रूप में उभरे। वे स्वतंत्र हैं। उनमे कुछ कर दिखने की जूनून

एबिलिटी फाउंडेशन विश्व स्तरीय परिणाम देने के लिए समृद्ध प्रक्रियाओं, ठीक समन्वय और टीम की पूरी उपस्थिति को संमिलित करता है।

है। उनकी विकलांगता या प्रतिकूल परिस्थिति, चाहे वे जन्मजात हो या अधिग्रहित, उनके कुछ भी हासिल करने से नहीं रोकती। उनके क्षितिज का विस्तार हुआ है। निश्चित रूप से, यह पुरस्कार के लिए नामांकित हर व्यक्ति के बारे में सच है, चाहे उनका नाम अल्पसूची में हो या नहीं, और यह उन लोगों के बारे में भी सच है जो ऐसे दूरस्थ इलाकों में रहते हैं कि वे नामांकित भी नहीं हो सकते, लेकिन दैनिक आधार पर विजयी हैं।

सभी उपलब्धिकर्ताओं के बीच दिखाई देने वाली समानता, सर्वोच्च शक्ति के साथ सम्बन्ध और प्रचुर और अमोघ बल और ऊर्जा है। स्वर्णा के शब्दों को उधार लेते हुए, मैं कहना चाहती हूँ, "ये पाँच सितारे दुनिया के लिए असीम आश्चर्य से भरे सीमित संस्करण हैं। हर ऐसे सितारा प्रेरणा और आशा के स्रोत है । उनकी सकारात्मकता और उनकी समाधान-उन्मुख सोच उन्हें बाकी लोगों से अलग बनाती है।सितारों के पास दुर्भाग्य, दुख या विपदा के बारे में सोचने के लिए बहुत कम समय है। वे आगे बढ़ते रहते हैं। वे पहले की तुलना में बेहतर हो जाते हैं। वे सभी के लिए दुनिया को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं।

प्रत्येक वर्ष, कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स एक यात्रा है। नियोजन और इस कार्यक्रम को साकार करने में लिए उठाए गए कदम - विज्ञापनों छपवाने से लेकर नामांकन प्राप्त करना और नामांकन की छान-बीन करना , लघु-सूचीकरण, जूरी संविधान, ज्यूरी बैठक के माध्यम से विचार-विमर्श और प्राप्तकर्ताओं का चयन, और मनोरम ऑडियो विजुअल्स के माध्यम से उनकी कहानियों को प्रस्तुत करना आदि - के बारे में कार्यक्रम के दौरान साझा किया गया था।

यह कार्यक्रम अभिगम्य मंच के साथ एक अभिगम्य हॉल में हुई, और सब लोग उच्च सतर्कता के साथ काम कर रहे थे। प्रत्येक पुरस्कार के प्रस्तुति के दौरान मंच में

एक रूपांतरित उपस्थिति देखने को मिली। प्राप्तकर्ता के बारे में ऑडियो-विजुअल की स्क्रीनिंग और हर प्रस्तुति के पहले प्रशस्ति पत्र का पढ़ना और ट्रॉफ़ी को प्राप्तकर्ताओं से सावधानीपूर्वक एकत्र करना ताकि वे निर्बाध अपनी स्वीकृति भाषण दे सकें। पुरस्कारों की प्रस्तुति के बीच, आयोजन में योगदान देने वाले लोगों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। यह एक सुविचारित कार्यक्रम थी जो बिना किसी बाधा के सटीकता के साथ सम्पन्न हुयी। और सबके अंत में पुरस्कृत प्राप्तकर्ताओं और दर्शकों के सम्मान में एक विस्तृत रात्रि भोज था।

6.30 बजे, पर्दा उठने से बहुत पहले, हम कार्यक्रम स्थल की हवा में उत्सव की भावना महसूस कर पा रहे थे । कार्यक्रम स्थल पर जल्दी पहुँचने के कारण मुझे एबिलिटी टीम के सदस्यों से हार्दिक स्वागत का अनुभव करने का मौका मिला। मैंने कार्यकर्म का सोशल मीडिया में लाइव अपडेट होते देखा और मैंने इस कार्यक्रम को सोशल मीडिया में अनुसरण करने के साथ साथ इसका जीवंत रूप से देखना का आनंद लिया।

मंच की सजावट का विषय प्रकृति था। मंच मछली और पौधों के साथ जीवित लग रहा था। कटोरे के अंदर चलती मछलियों पर कोई ज़्यादा ध्यान नहीं दे रहे थे ... उन्हें देखने के लिए कुछ पल की शांतचित्त और सचेतन की ज़रुरत थी। ऐसे ही, जीवन में बहुत सारी अच्छी चीजों पर कोई ध्यान नहीं देता है।उन मछलियों के लिए, उनका कटोरा शायद उनका महासागर है। कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स हर एक मछली को मुख्यधारा के महासागर में समावेश करने का एक कदम है। सही दिशा में उठाया गया एक कदम सभी को प्रेरित और रूपांतरित करता है।

एबिलिटी फाउंडेशन के कार्यक्रम हमेशा खूबसूरत होती हैं, क्योंकि हमारे चारों तरफ सभी इंद्रियों, संकेतों और प्रतीकों का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के संचार देखने को मिलता है।

अनिंद्या भट्टाचार्य ने दर्शकों के साथ साझा किया कि जब उन्हें पहली बार पता चला कि उन्हें यह पुरस्कार मिल रहा है, उन्हें लगा कि कोई उनके साथ मज़ाक कर रहे हैं। एक जीवित दिग्गज, वे यह दर्शाते है कि हर पल को कैसे पूर्ण रूप से जीया जा सकता है। मंच पर बातचीत के दौरान, उन्होंने साझा किया कि प्रौद्योगिकी के मदद से वे कैसे स्वतंत्र यात्रा कर पा रहे हैं। संस्थापक ने कई वर्षों पहले कंप्यूटर और ब्रेल का उपयोग करते हुए अनिंद्या के साथ उनकी बातचीत के बारे में याद दिलाया। फिल्म निर्माता और एबिलिटी फाउंडेशन की ट्रस्टी, रेवती का अनिंद्या के पुराने मार्गदर्शक कुत्ता डीना को और अनिन्द्या की हास्य की भावना को याद दिलाना पुरस्कार के शाम के कुछ अद्भुत पल थे।

गैर विकलांग लोग अपने अपने गैर विकलांगता को हल्के में ले लेते हैं। इसलिए इस बात में कोई कोई आश्चर्यता नहीं है कि वे विकलांग लोगों के संघर्षों को भी हलके से ले लेते हैं। कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स जैसी कार्यक्रम हमें ऐसे सीमा पार ले जाती है, क्योंकि इन पांच सितारों ने, आगे बढ़ने के लिए अपने विकलांगता का बहाने नहीं दिया। वे हमें अपने योग्यताओं का पूरा उपयोग न करने का और कुछ न करने के लिए बहाने ढूंढ़ने के बारे में अपराध बोध महसूस कराते हैं। इसकी सभी विस्मय और महिमा में, उनका जीवन उनका संदेश बन जाता है। यह हमारे लिए एक विनम्र अनुभव है, क्योंकि हम जानते हैं कि अब हम दर्शक हैं और वे लक्ष्य-प्राप्तिकर्ता - और यह सिर्फ इस शाम के लिए नहीं।

एबिलिटी फाउंडेशन के कार्यक्रम हमेशा खूबसूरत होती हैं, क्योंकि हमारे चारों तरफ सभी इंद्रियों, संकेतों और प्रतीकों का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के संचार देखने को मिलता है। अनिंद्या और उनके दुभाषिए को देखते मैं सोचने लगी कि एक माँ या प्राथमिक देखभाल करने वाला शिशु के कम परिभाषित सार संचार को कैसे समझते हैं। करुणा, संवेदनशीलता, धैर्य, वास्तविक देखभाल, प्रेम, समझ और ग्रहणशीलता जैसे गुणवाले लोगों के कारण ही बधिरान्ध लोगों तक पहुँचने के लिए एक सांकेतिक भाषा प्रणाली का विकस हुआ होगा। यह इन एहसासों से शुरू होता है , "मतभेदों को स्वीकार करो! हर कोई मायने रखता है! हर कोई सम्मान अवसर के हकदार है! हर किसी के पास कहने के लिए कुछ है! हर कोई कुछ अच्छा कर सकता है! हर योगदान महत्वपूर्ण है और मायने रखता है!"

महान आत्माएं जो ज़रुरत से थोड़ा अधिक करते हैं, समर्थन प्रणाली, सुविधाजनक प्रयासों और पर्यावरण जो सुनिश्चित करती हैं कि विविध क्षमताओं वाले लोग पारस्परिक सम्मान, और खुशी के साथ भाग लेते हैं, - यही सब वास्तविक समावेशन है । स्वर्णलता, रक्षिता, अनिंद्या, आदिल और टिन्केश जैसे सितारों के सफलता को हमेशा गर्व के साथ मनाने वाले लोग हमारे कृतज्ञता और प्रशंसा का पात्र है।

अनिंद्या भट्टाचार्य

केविनकेयर एबिलिटी स्पेशल रिकग्निशन अवार्ड

वे मार्ग में अग्रणी है जिनकी सफलता की राह हमें सकारात्मकता और आशा देती है। पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गाँव में जन्मे, बचपन से ही बधिर हैं। अपने परीक्षणों और कष्टों पर काबू पाकर आज वे एक सुन्दर और पूर्ण जीवन जीते रहे हैं। अनिंद्या भट्टाचार्य एक अपने क्षेत्र में अग्रणी, एक प्रौद्योगिकी परीक्षक, एक उद्यमी, एक कार्यकर्ता, एक पारिवारिक व्यक्ति, कई शौक के व्यक्ति, एक उत्साही और स्वतंत्र यात्री ... और भी बहुत कुछ हैं।

अनिंद्या ने अरकंसास विश्वविद्यालय, लिटिल रॉक (University of Arkansas at Little Rock UALR) से राजनीति विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। वह न्यूयॉर्क में स्थित हेलेन केलर नेशनल सेंटर (Helen Keller National Center - HKNC) में नेशनल आउटरीच टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट एंड ट्रेनिंग प्रोग्राम (National Outreach Technology Development and Training Program) के समन्वयक के रूप में पूर्णकालिक काम करते हैं। वह अन्य बधिरान्ध लोगों को उनके सपना साकर करने और उन्हें सफल जीवन जीने में मादद करने का अपना लक्ष्य को पूरा कर रहे हैं। वे दृष्टिहीन और बधिर उपभोक्ताओं और प्रौद्योगिकी प्रशिक्षकों को ब्रेल एक्सेस, स्क्रीन आवर्धन और भाषण आउटपुट के माध्यम से कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। वे विकलांग लोगों के लिए, विंडोज और मैक ओ.एस एक्स-आधारित एप्लिकेशन, नए उत्पादों के प्रोटोटाइप और दूरसंचार उपकरणों और सेवाओं के अभिगम्यता का मूल्यांकन और बीटा टेस्टिंग (Beta test) करते हैं । वह फ्लोरिडा और आयोवा डेफब्लिंड उपकरण वितरण कार्यक्रमों के प्रभारी हैं और इन राज्यों के बीच हमेशा यात्रा करते हैं ताकि प्रौद्योगिकी आकलन प्रदान किया जा सके और सभी पात्र उपभोक्ताओं को उपकरण और प्रशिक्षण वितरित किया जा सके।

अभी और भी बहुत कुछ है, अनिंद्या, बापिन ग्रुप, एल.एल.सी (Bapin Group, LLC) नामक एक डिजिटल ऑनलाइन स्टोर व्यवसाय भी चलाते हैं और इस कंपनी के सीईओ हैं। वह पहले इंटरनेशनल डेफब्लिंड एक्सपो के संस्थापक हैं, जिसमें बधिरंध लोग विभिन्न उत्पादों को छूने और महसूस करने और विक्रेताओं के साथ सीधे बातचीत कर पाएंगे .... और भी बहुत कुछ!

उनकी पेशेवर सफलता के अलावा, एक कार्यकर्ता के रूप में अनिंद्या सक्रिय हैं। यू.ए.एल.आर में एक अंडरग्रेजुएट छात्र के रूप में, अनिंद्या पाँच साल के लिए अमेरिकन डिसेबिलिटी एक्ट कमिटी के सुविधाओं के उपसमिति के सदस्य रहे। इसमें उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि पूरा परिसर रैंप, बिजली के दरवाजे और अनुकूली कंप्यूटर उपकरण, जैसे संशोधनों के साथ अभिगम्य हो। आज, वह कोएलिशन ऑफ़ ऑर्गनाइसेशन फॉर एक्सेसिबल टेक्नोलॉजी(Coalition of Organizations for Accessible Technology - COAT) के सदस्य है, जो बधिरंधाता सहित अन्य विकलांग लोगों के लिए अभिगम्यता को सुधरने और विधायी गतिविधियाँ पर नज़र रखने का काम करता है। 2010 में, अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ डेफब्लिंड (American Association of the Deafblind - AABD) के एक प्रतिनिधि के साथ, उन्होंने 21 वीं सेंचुरी कम्युनिकेशन्स एंड विडिओ एक्सेसिबिलिटी एक्ट (21st Century Communications and Video Accessibility Act.) के पारित होने के लिए काम किया। उन्होंने 2010-2014 में कैलिफोर्निया में डेफ एंड डिसेबल्ड टेलीकम्यूनिकेशन प्रोग्राम (Deaf and Disabled Telecommunications Program - DDTP) के तहत इक्विपमेंट एडवाइजरी समिति (Equipment Program Advisory Committee - EPAC) में सेवा करते हुए यह सुनिश्चित किया कि कैलिफ़ोर्निया के बधिरान्ध लोग को पर्याप्त दूरसंचार उपकरण और सेवाएँ प्राप्त करें। ऐसी है उनकी प्रखरता और जोश।

अनिंद्या कहते हैं, "पूरी दुनिया में, अब लोग विकलांग लोगों का समर्थन कर रहे हैं। और तकनीक मेरे लिए एक अद्भुत परिवर्तक साबित हुआ। मैं वास्तव में स्वतंत्र हो गया हूँ। इन दिनों प्रौद्योगिकी हमें बहुत कुछ करना संभव बनता है।" फिर भी, वे अभिगम्य टेक्नोलॉजी में अधिक शोध और विकास का आह्वान करते हैं, जिससे एक्सेसिबिलिटी उपकरणों की लागत में कमी आएगी। "तभी तकनीक का उपयोग वास्तव में विकलांग लोगों तक पहुँच सकता है।"

यह कहना कि यह अनिंद्या के लिए यह एक अविश्वसनीय यात्रा रही है एक न्यूनोक्ति पश्चिम बंगाल के छोटे से गाँव से, अपनी माँ के गले और होंठों की हरकत को महसूस करके बोलना और पढ़ना सीखा, बदमाश सहपाठियों के ताने और कई कठिनाई का अनुभव करते, स्कूल से निष्कासित हुए क्योंकि किसी को पता नहीं तहत कि उसे कैसे पढ़ाया जा सके, दर्दनाक वर्षों को अकेले में काटते हुए, किसी से संवाद करने में असमर्थ, कोलकत्ता के बेहला school में पड़ते समय उनका जीवन बदला। उन्हें पर्किन्स स्कूल फॉर द ब्लाइंड, वतरतौन, मेसाचुसेट्स में दाखिला मिला और उन्होंने अकेले रहने का विकल्प चुना। उन्होंने अंग्रेजी, ब्रेल और सांकेतिक भाषा सीखी। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपाधि प्राप्त करने के बाद उस राह पर आगे बढ़े जिसे अब हम अच्छी तरह जानते हैं।

"हम सभी ने जीवन में संघर्ष किया है। सकारात्मकता और खुले दिमाग के साथ, हम अपने सरे सपने साकार कर सकते हैं। अगर हम असफल होते हैं, तो भी कोई बात नहीं है ... क्योंकि यह भी जीवन का हिस्सा है और हमें इससे कुछ सीखने को मिलता है।"

आज, अनिंद्या बधिरान्ध समुदाय के नेता हैं, एक सफल पेशेवर, एक उद्यमी, एक कार्यकर्ता, एक खेलउत्साही और कई शौक के आदमी है। वे एक संपूर्ण जीवन जी रहे हैं और यह आपको विश्वास दिलाता है कि जीवन में कठोर चुनौतियों के बावजूद बहुत कुछ संभव है। वे कहते हैं, "हम सभी ने जीवन में संघर्ष किया है। सकारात्मकता और खुले दिमाग के साथ, हम अपने सरे सपने साकार कर सकते हैं। अगर हम असफल होते हैं, तो भी कोई बात नहीं है ... क्योंकि यह भी जीवन का हिस्सा है और हमें इससे कुछ सीखने को मिलता है।"

अनिंद्या का अगला सपना? "खुद कार चलाकर हर जगह घूमना।"

स्वर्णलता. जे

केविनकेयर एबिलिटी अवार्ड फॉर एमिनेंस

इनका जीवन साहस, सकारात्मकता और आत्मबल की एक अविश्वसनीय यात्रा है। सदा मुस्कुराती यह शानदार महिला, अपने दृष्टिकोण और उपलब्धियों के कारण एक रोल मॉडल है। अपने पति गुरुप्रसाद के साथ स्वर्णलता द्वारा स्थापित स्वर्गा चैरिटेबल ट्रस्ट ने, कुछ ही वर्षों के अंतराल में, अपने शहर में सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के उपयोग में भारी प्रगति किया है, और इसके अलावा विकलांग लोगों के अभिगम्यता और पुनर्वास के बारे में व्यापक जागरूकता और संवेदनशीलता पैदा की है।

तनाव मुक्त, एक नरम और चमकदार मुस्कान के साथ तैयार है। बहुत कुछ करने के लिए उत्साहित है। स्वर्णलता, अपने विकलांगता या मल्टीपल स्क्लीरोसिस (Multiple sclerosis) के कारण सामना कर रहे गहन दर्द, जो उसे चैन से रात की नींद भी नहीं देता का संकेत नहीं देती है।

न ही तीव्र दर्द और न ही प्रगतिशील गतिहीनता ने स्वर्णलता को बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने से रोका है। स्वर्गा चैरिटेबल ट्रस्ट, जिसे उन्होंने अपने पति गुरुप्रसाद के साथ मिलकर स्थापित किया था, शानदार प्रगति कर रहा है। इसमें 10 सरकारी स्कूलों में और भारतीय रेलवे के कोयम्बटूर जंक्शन के हर प्लेटफॉर्म पर अभिगम्य शौचालय बनाना, प्लेटफॉर्म 2/3 पर क्रियाशील लिफ्ट बनाना, कोयम्बटूर के नौ स्कूलों को व्हीलचेयर अनुकूल बनाना, कोयंबटूर के पुलिस कमिश्नर कार्यालय को व्हीलचेयर अनुकूल बनाना, यहाँ पर अभिगम्य शौचालय बनाना और विकलांगों के लिए निर्दिष्ट पार्किंग स्थलों का आयोजन करना शामिल है।

तमिलनाडु के पहले अभिगम्य व्हीलचेयर परिवहन सेवा 'सारथी' (SARATHI)का प्रक्षेपण का श्रेय, स्वर्गा को जाता है। सारथी वैन में एक फोल्डेबल व्हीलचेयर रैंप, एक ओवरहेड पानी की टंकी, एक परिवर्तनीय सोफा-कम-बेड, व्हीलचेयर संयम, एक रासायनिक शौचालय, एक टेलीविजन और 3 यात्री सीटें हैं। वैन छोटी या लंबी दूरी की यात्राओं पर जाने के इच्छुक विकलांगों के लिए बहुत ही फायदेमंद है।

स्वार्गा की एक और बड़ी पहल है, सौख्य फिजियोथेरेपी एंड वैलनेस सेंटर (Sowkhya Physiotherapy and Wellness Centre), जो विकलांग और गैर विकलांग लोगों के लिए मुफ्त में गतिशीलता-सहायक उपकरण और दवा प्रदान करता है और विकलांग लड़कियों और महिलाओं के लिए अस्पताल में भर्ती के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। किसी भी तरह के दर्द वाले लोगों के लिए, सौख्य द्वारा दी जाने वाली फिजियोथेरेपी और अन्य उपचार के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए, स्वर्गा सरकारी स्कूलों में चिकित्सा शिविर आयोजित करती है। प्रेरणादायक 'अइ ऍम स्पेशल' (I'm Special') कैलेंडर स्वर्गा का एक और प्रभावशाली और लोकप्रिय उपक्रम है।

कष्टदायी दर्द, बिना सहायता के बिस्तर से शौचालय न जा पाना, कलम पकड़ने जैसे नियमित कार्यों को करने में असमर्थ होना आदि के बावजूद, स्वर्णलता यह सब करती है।

“जब मुझे मल्टीपल स्क्लीरोसिस का निदान हुआ, तो लोगों ने कहा कि मैं एक अच्छी पत्नी, एक अच्छी माँ या समाज के लिए उपयोगी नहीं हो सकती। लेकिन अब मैं यहाँ हूँ। मेरे बच्चे स्पोर्ट्स चैंपियन हैं। (वे न केवल प्राप्तकर्ता हैं बल्कि बहुत ही जिम्मेदार और आत्मनिर्भर हैं जो मेरे और परिवार में दूसरों की देखभाल भी हाथ बटाते हैं)। हाल ही में, मेरे पति और मैंने सर्वश्रेष्ठ दम्पति होने के लिए एक पुरस्कार जीता। यहाँ मुझे समाज में योगदान के लिए पुरस्कार मिल रहे हैं।''निहितार्थ को जोर देने की आवश्यकता नहीं है। यह उनके दृष्टिकोण और भावना के लिए श्रद्धांजलि है, जब वह कहती हैं, "लोग हमें अलग-अलग नामों से बुलाते हैं ...डिफरेंटली एबल्ड, दिव्यांग, विकलांग, विशेष आदि। लेकिन मुझे लगता है कि मैं सिर्फ विशेष नहीं, बल्कि सीमित संस्करण हूँ"।

2009 में, 29 की आयु में स्वर्णलता को मल्टीपल स्केलेरोसिस का निदान हुआ था। इसके कारण उनकी करियर, जो उनके व्यवस्थापक कौशल और व्यक्तिगत आकर्षण के कारण चढ़ाव में था , में रूकावट पैदा की। वह गर्दन के नीचे पेरालिसिस हो गयी, जिसके फलस्वरूप उसे प्राइमरी प्रोग्रेसिव मल्टीपल स्केलेरोसिस - एक अपक्षयी स्थिति जिसमें प्रतिरक्षा प्रणाली मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र से समझौता करती है - का निदान हुआ।

"मैंने हमेशा के लिए अपनी गतिशीलता का 40 प्रतिशत तभी खो दिया, और शेष 60 प्रतिशत धीरे-धीरे रोग के बढ़ने के साथ ही का होता जा रहा है "बिना किसी कड़वाहट के बताती हैं। समाज ने कोई सहानुभूति नहीं दिखाई। जिस कंपनी में वह काम कर रही थी वे भी ऐसे ही थे और उन्होंने स्वर्णलता को नौकरी से निकाल दिया।

लेकिन फिर, कोई भी स्वर्णलता को लंबे समय तक बाध्य नहीं कर सकता है। उसने एम.एस के कारण होने वाले तीव्र दर्द और गतिहीनता का सामना करना सीखा और दुनिया का मुकाबला करने के लिए खुद को सुदृढ़ किया। और क्यों नहीं? हर बार जब जीवन ने उसपर प्रहार किया यह वीभत्स महिला इससे उभरकर आयी है। इसके पहले स्वर्णलता ने कई आघातों का सामना किया - अपने किशोरावस्था में सड़क दुर्घटना जिसमे उसके जबड़े और पैर के हड्डी टूटने के कारण सर्जरी के परिणामस्वरूप उसकी पढ़ाई में आये अड़चन और उसके पिता की आत्महत्या।

स्वर्णलता, अपने पति गुरुप्रसाद और दो साल के बेटे गगन के साथ कोयंबटूर स्थानांतरितहो गई। जल्द ही उनकी बेटी गाना का जन्म हुआ। अपनी बदली हुई वास्तविकता को स्वीकार करते हुए और अपने जीवन पर काबू पाकर स्वर्णलता अवसाद से बाहर निकली।

उसने तमील - स्थानीय भाषा सीखी। वैसे, वह अब 10 भाषाओं में बातचीत कर सकती है। वह एक प्रतिभाशाली गायिका, लघु कथाओं की लेखिका, फ़ोटोग्राफ़र और सौंदर्य प्रतियोगिता 'मिस्सस कोयंबटूर’के फाइनलिस्ट भी थीं। और एक लोकप्रिय प्रेरक वक्ता भी हैं।

सामुदायिक सेवा में उनकी प्रवेश संगठित था। इसकी शुरुआत अल्पसुविधाप्राप्त मरीजों को मासिक दवाई देने, विकलांग बच्चों को स्कूल की फीस के साथ मदद करने और गतिशीलता सहायक उपकरण जैसे व्हीलचेयर, वॉकर, श्रवण यंत्र प्रदान करने और अस्पताल में भर्ती होने के खर्चों में मदद करने के साथ हुई।

स्वर्णलता को लगा कि " जब तक मैं जीवित हूँ मुझे समाज के लिए अपने प्रतिभा का उपयोग करने की आवश्यकता है" और इस सोच के फलस्वरूप इस दम्पति ने 2014 में ‘स्वर्गा’ (Swarga) की शुरूआत की। पुनर्वास और पुनर्वास पिकल्पों के बारे में जागरूकता की कमी को देखते हुए , न्यूरो, आर्थो, कार्डियो और अन्य चिकित्सा मुद्दे के कारण विकलांग लोगों के जीवन शैली को बेहतर बनाने के लिए, स्वर्णलता, फिजियोथेरेपी, वैकल्पिक स्वास्थ्य विकल्प और आहार और जीवनशैली परामर्श सहित एक समग्र पैकेज सुविधा स्थापित करना चाहती थी।

हैदराबाद की उड़ान के दौरान तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के साथ एक आकस्मिक मुलाक़ात के कारण उन्हें सरकारी सहायता प्राप्त हुयी। स्वर्गा को नगरपालिका भवन में सहायिकी किराए पर जगह मिली। नवंबर

"“जब मुझे मल्टीपल स्क्लीरोसिस का निदान हुआ, तो लोगों ने कहा कि मैं एक अच्छी पत्नी, एक अच्छी माँ या समाज के लिए उपयोगी नहीं हो सकती। लेकिन अब मैं यहाँ हूँ। मेरे बच्चे स्पोर्ट्स चैंपियन हैं। (वे न केवल प्राप्तकर्ता हैं बल्कि बहुत ही जिम्मेदार और आत्मनिर्भर हैं जो मेरे और परिवार में दूसरों की देखभाल भी हाथ बटाते हैं)। हाल ही में, मेरे पति और मैंने सर्वश्रेष्ठ दम्पति होने के लिए एक पुरस्कार जीता। यहाँ मुझे समाज में योगदान के लिए पुरस्कार मिल रहे हैं।

2018 में, स्वर्गा ने न्यूरोमस्क्युलर अव्यवस्था के इलाज के लिए सौख्य फिजियोथेरेपी सेंटर शुरू किया। केंद्र को चलाने के लिए वित्त स्वर्णलता अपने प्रेरक बोल के माध्यम से जुटाती है , जिसे वह पहले नि: शुल्क कर रही थी। स्वर्गा के ''अइ ऍम स्पेशल' ' कैलेंडर से प्राप्त आय को भी इस सुविधा के लिए उपयोग किया जाता है। उसकी विश्वसनीयता और ट्रैक रिकॉर्ड वित्तीय सहायता पाने में बहुत बड़ा कारक रहा है। संयोग से, गुरुप्रसाद स्वर्गा के दानदाताओं में से एक हैं।

स्वर्णलता कहती हैं “स्वर्गा की यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा सीएसआर फंडिंग प्राप्त करना रहा है। स्वर्गा अब बढ़ रहा है और इसे बनाए रखने के लिए हमे सीएसआर समर्थन की आवश्यकता है। दूसरा पहलू विकलांग लोगों को अभिगम्य बुनियादी ढांचे की आवश्यकता को समझने में है। उदाहरण के लिए, जब हमने अपने सारथी वैन में एक शौचालय लगाया किया, तो लोग चकित रह गए। उन्होंने इसे एक विलासिता के रूप में देखा। वे यह नहीं समझते हैं कि विकलांग लोगों के लिए यह एक आवश्यकता है, क्योंकि अभिगम्य शौचालय कहीं भी उपलब्ध नहीं हैं। ”

उसका अगला लक्ष्य? अगले दो वर्षों में "40 से 50" बेड वाला अस्पताल शुरू करना!

RANKED AMONG INDIA'S TOP 50 UNIVERSITIES IN THE NIRF RANKING

FOR THE 4th CONSECUTIVE YEAR

SATHYABAMA

INSTITUTE OF SCIENCE AND TECHNOLOGY

(DEEMED TO BE UNIVERSITY)

(Established under section 3 of the UGC Act, 1956)

Accredited with "A" Grade by NAAC | Approved by AICTE

B.E. / B.Tech. / B.Arch. / B.Des. / B. Pharm

Aeronautical | Automobile | BioMedical | BioTechnology | Chemical | Civil | Computer Science | Electronics and Communication |Electronics and Telecommunication | Electrical and Electronics | Electronics and Instrumentation | Information Technology | Mechatronics | Mechanical | Architecture | Interior Design | Pharmacy

ARTS AND SCIENCE

B.B.A
B.COM
B.A - ENGLISH
B.SC - FASHION DESIGN
B.SC - COMPUTER SCIENCE
B.SC - PHYSICS
B.SC - CHEMISTRY
B.SC - MATHEMATICS
B.SC - BIOCHEMISTRY
B.SC - PSYCHOLOGY
B.SC - MICROBIOLOGY
B.SC - BIOTECHNOLOGY
B.SC - VISUAL COMMUNICATION
M.A - ENGLISH
M.SC - PHYSICS
M.SC - MATHEMATICS
M.SC - CHEMISTRY
M.SC - MEDICAL BIOTECH & CLINICAL RESEARCH
M.SC - VISUAL COMMUNICATION

PG COURSES (M.E/M.TECH/M.ARCH/M.B.A)

- Computer Science and Engineering
- Applied Electronics
- Computer Aided Design
- Embedded Systems and Iot
- VLSI Design
- Power Electronics And Industrial Drives
- Structural Engineering
- Biotechnology
- Medical Instrumentation
- Bio Pharmaceutical Technology
- Sustainable Architecture
- Building Management
- Master of Business Administration

LAW

- LL.B.
- B.A. LL.B. (Hons.)
- B.Com.LL.B. (Hons.)
- B.B.A. LL.B. (Hons.)

PHARMACY

- B. PHARM (4 YEARS)
- D.PHARM (2 YEARS)

NURSING

- B.SC NURSING (4 YEARS)

Ph.D (Full/Part Time)
Applications are Invited

Admissions Open for Lateral Entry Candidates

Jeppiaar Nagar, Rajiv Gandhi Salai, Chennai - 600 119. Tamilnadu, India.

TOLL FREE Number - 1800 425 1770

ADMISSION CONTACT:
99400 58263 / 99400 69538 / 044-2450 3150/ 51/52/54/55

www.sathyabama.ac.in

आदिल मुहम्मद नज़ीर अंसारी

केविनकेयर एबिलिटी मास्टरी अवार्ड्स

पैरा तीरंदाजी में एक राष्ट्रीय चैंपियन, पैरा तैराकी में कई पदकों के विजेता, एक सामाजिक कार्यकर्ता जो सुरक्षित ड्राइविंग की जरूरत का सदेश लोगों तक पहुंचाते हैं है, रीढ़ की हड्डी में चोट वाले नए रोगियों के लिए एक संरक्षक, और एक रिकॉर्ड सेटिंग यात्री - आदिल मोहम्मद नाज़िर अंसारी ने क्वाड्रीप्लेजिया (quadriplegia) को उनके स्वतंत्रता या उत्साह जीवन में अड़चन बनने नहीं दिया।

आदिल अपने पिछले उपलब्धियों पर आराम करने वालों में नहीं हैं, हालांकि यह विजय प्राप्त करना कितना मुश्किल क्यों न हो, वे आज चेक गणराज्य में होने वाले 2020 टोक्यो पैरालिंपिक क्वालिफायर के लिए तैयार कर रहे हैं।

उन्होंने दो लिम्का रिकार्ड्स तोड़े, पहला पैरापैजिक बाइकर के 100 किमी का रिकॉर्ड (उन्होंने 300 किमी को कवर किया) और दूसरा 2015 में 6016 कि.मी से अधिक की उनकी सात-दिवसीय क्रॉस-कंट्री रोड ट्रिप था, जिसमें उन्होंने एक परिवर्तित कार में प्रतिदिन औसतम 800 किमी सफर किया। इस यात्रा के दौरान वे मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई से होकर गुज़रे। फिर उन्होंने तैराकी (इंदौर में पैरा तैराकी प्रतियोगिताओं में दो स्वर्ण पदक जीतना) और तीरंदाजी में भाग लिया। उन्होंने चेक गणराज्य, दुबई, नीदरलैंड में भारत का प्रतिनिधित्व किया है और तीन बार राष्ट्रीय चैंपियन का खिताब जीता है। रंजीत चामले, स्पोर्ट्स डायरेक्टर एसपी कॉलेज, पुणे और आदिल के कोच के अनुसार, आदिल की विकलांगता की गंभीरता को देखते हुए, आदिल जो कर रहा है, वह वास्तव में असंभव है।

यह दुर्घटना 2002 में हुई, जब आदिल इक्कीस साल का था। नदी में गोता लगाने के दौरान एक चट्टान पर उनका सिर टकरा गया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें गर्दन के नीचे पैरालिसिस हो गए। सिर्फ यही नहीं था। सर्जरी के तुरंत बाद, गंभीर निमोनिया का अनुबंध किया और 28 दिनों के लिए उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया। जब उसे होश आया, तो वे अत्यंत दर्द में थे। उन्हें शैय्या व्रण (bedsores) भी विकसित हुआ जो उनकी रीढ़ की हड्डी की गहराई तक गयी। वे एक ट्यूब के माध्यम से सांस ले रहे थे और अपने फेफड़ों से कफ को हटाने के लिए एक सक्शन मशीन पर निर्भर होना पड़ा।

फिर पुनर्वास के लिए लंबी और कठिन दौर शुरू हुई। आदिल जो हमेशा चुस्त और परिवार के मुसीबतों को दूर करने वाले थे, को अपनी सबसे निजी जरूरतों के लिए भी पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर रहना पड़ा। यह उनके लिए एक बहुत बड़ा झटका था और आदिल ने कई बार उस दिन को कोसा , जिस दिन उसकी जान बच गई थी ।

फिर बदलाव आया । “मैंने अपनी माँ का चेहरा देखा। दुर्घटना के बाद वह कभी नहीं मुस्कुराई थी। उस पल ने मुझे बदल दिया। मैं उसके चेहरे पर मुस्कान लाना चाहता था।मैंने सोचा, अगर मुझे मरना था, तो मुझे मेरे दुर्घटना के समय या अस्पताल में,

"मैंने अपनी माँ का चेहरा देखा। दुर्घटना के बाद वह कभी नहीं मुस्कुराई थी। उस पल ने मुझे बदल दिया। मैं उसके चेहरे पर मुस्कान लाना चाहता था।मैंने सोचा, अगर मुझे मरना था, तो मुझे मेरे दुर्घटना के समय या अस्पताल में, जब संक्रमणों ने मुझे तबाह कर दिया था, मर गया होता। लेकिन, तब मैं मरा नहीं। मैं अभी भी जिंदा हूँ। मैं जीवित हूँ, क्योंकि भगवान ने किसी कारण मुझे जीने दिया।"

जब संक्रमणों ने मुझे तबाह कर दिया था, मर गया होता। लेकिन, तब मैं मरा नहीं। मैं अभी भी जिंदा हूँ। मैं जीवित हूँ, क्योंकि भगवान ने किसी कारण मुझे जीने दिया", उन्होंने साझा किया। तभी आदिल ने अपनी विकलांगता को स्वीकार करने और जीवन में आगे बढ़ने का फैसला किया। इस स्वीकृति ने अवसरों के द्वार खोला।

आदिल को मुंबई के एक वरिष्ठ फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. जैकब के परामर्श के लिए ले जाया गया, जिन्होंने उन्हें जीवन के लक्षण दिखाने वाली मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए व्यायाम सिखाया। आदिल ने गंभीरतापूर्वक इसका अनुसरण किया और उसकी मांसपेशियां मजबूत होने लगे , जिसमें वे मांसपेशियों भी शामिल थे जिनमे पहले जीवन के संकेत नहीं दीख रहे थे।

आदिल और अधिक आत्म निर्भर होने लगे, वह खुद बैठने, खाने और दाढ़ी बनाने में सक्षम हुए । बाद में उन्होंने आई.यस.आई.सी (ISIC) के व्हीलचेयर स्किल ट्रेनर राजीव विराट से इन रोजमर्रा की गतिविधियों के और अधिक कुशल तरीके सीखे। इसके बाद आदिल ने अपनी 12 वीं की परीक्षा दी।यहीं पर उनकी मुलाकात मजीदा से हुई, जो बाद में उनके घर आकर उनसे शादी का प्रस्ताव रखा। मजीदा उनकी समर्पित जीवनसाथी बनी हुई हैं, आदिल के हर महत्वाकांक्षा में उनका साथ देती हैं।

उसके बाद आदिल ने रोजाना के लिए भैंस पालन-पोषण किया। वे हर दिन खेत में जाते थे और उन्होंने वितरण नेटवर्क स्थापित किया। लेकिन हर दिन कोई उन्हें खेत तक पहुँचाना पड़ता था और कभी-कभी, ड्राइवर उपलब्ध नहीं थे। इसलिए आदिल ने एक स्कूटर को संशोधित करने और इसे स्वयं चलाने का फैसला किया। जल्द ही, उन्होंने दो ड्राइविंग रिकॉर्ड्स स्थापित किया। आदिल कहते हैं, "विकलांगता होने के बाद मैने पाया कि लोगों ने मुझे गंभीरता से नहीं लिया। मैं इसे बदलना चाहता था।" इस कारण ने आदिल को दो ड्राइविंग रिकॉर्ड स्थापित करने के लिए प्रेरणा दिया!

इसके बाद, आदिल ने तैराकी की ओर ध्यान दिया, पदक जीते और अभिगम्यता के मुद्दों के कारण, तैराकी छोड़कर, तीरंदाजी में रूचि लेने लगे। शुरुआत में, धनुष को पकड़ना भी आदिल के लिए एक चुनौती थी। उन्होंने एक यौगिक धनुष के साथ अभ्यास करना शुरू किया, और बहुत कठिनाई के साथ इसे संभालना सीखा। परीक्षण और त्रुटि से, आदिल ने अपनी अलग तकनीक विकसित की। आदिल 2016 से भारत में पैरा-तीरंदाजी में अग्रणी है।

“तीरंदाजी ने मुझे बदल दिया है। धनुर्धारियों को शुद्ध आत्मा बनना है। जिस पल आपका दिल क्रोध या घृणा से भर जाता है , आप अपना उद्देश्य खो देते है”, वे बुद्धिमत्ता पूर्वक कहते हैं। धनुष और तीर की उच्च लागत की वजह से तीरंदाजी एक महंगा खेल है, लेकिन आदिल को 100% यकीन है कि वे इसे जारी रखने का एक रास्ता खोज लेंगे। यदि आप विश्वास करते हैं, तो सब कुछ संभव होगा, वे कहते हैं।

आदिल के सामाजिक लक्ष्य भी हैं - रीढ़ की हड्डी में चोट वाले नए रोगियों का संरक्षण करने के अलावा, वह रीढ़ की हड्डी की चोटों के बारे में और सुरक्षित रूप से ड्राइव करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए काम करते हैं। उन्होंने कहा, "मेरे कई दोस्त दुर्घटनाग्रस्त हुए हुए और उनकी रीढ़ की हड्डी में चोट लगी क्योंकि वे गाड़ी चलाते समय फोन पर बात कर रहे थे", वे बताते हैं। वे कहते हैं "मैं चाहता हूँ कि लोग याद रखें कि एक फोन कॉल एक जीवन

से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है। "वह स्कूलों और कॉलेजों और अन्य स्थानों पर जाकर 18-27 वर्ष के लोगों को लक्षित करते हैं, क्योंकि यह एक ऐसी उम्र है जब लोग अविवेकपूर्ण और बहुत तेज ड्राइविंग के लिए भेद्य हैं।। उन्होंने अफ़सोस है कि केंद्र सरकार ने ट्रैफिक नियमों को तोड़ने के लिए भारी जुर्माने का आदेश दिया है लेकिन कोई इसका पालन नहीं करता। वह कहते हैं, "लोग जीवन के बारे में चिंता नहीं करते हैं। यह उनके समझ में नहीं आती कि कभी भी कोई भी वकलांग हो सकता है। लेकिन एक भारी जुर्माना एक बहुत अच्छा और व्यावहारिक निवारक है।”

Taste that cannot
be explained,
And cannot be
forgotten
AVT
GOLD
cup
PREMIUM
dust tea
COLOUR * TASTE * STRENGTH
100% ASSAM BLEND
100% ASSAM
Blended after tasting
25,000 cups.

टिन्केश
केविनकेयर एबिलिटी मास्टरी अवार्ड्स

एशिया के एकमात्र ट्रिपल ऐम्प्युटी, जिन्होंने दुनिया के सबसे ऊंची कूद साइट से बंजी जम्प किया हो, एक साहसिक खेल उत्साही, और शायद एकमात्र ट्रिपल ऐम्प्युटी जिन्होंने जिम ट्रेनर और विकलांग और गैर विकलांग लोगों के वेलनेस कोच का सुपर सफल कैरियर बनाया हो, टिंकेश आपको यह मानने के लिए विवश करता कि कुछ भी असंभव नहीं है!

किशोरावस्था में एक ट्रिपल ऐम्प्युटी होने के बाद, टिन्केश घर पर बैठे-बैठे अपने दोस्तों को खेलते देखते हुए अनगिनत शामें बिताईं, वह चाहता था कि उसके दोस्त पहले की तरह उसे खेल में शामिल करें। लेकिन एक पल के लिए भी उसने खुद को निराशा महसूस करने दिया। इसके बजाय, उन्होंने साहसिक खेल - बंजी जंपिंग (Bungee Jumping) - में भाग लिया, जिसे आजमाने की हिम्मत हर किसी में नहीं होगा ... वे एशिया के पहले ट्रिपल ऐम्प्युटी हैं , जिन्होंने 160 मीटर की नेपाल के सबसे ऊंची कूद साइट से बंजी जम्प किया हो। वे पैरा साइक्लिंग, मैराथन, तैराकी, शूटिंग, व्हाइट-वाटर राफ्टिंग और क्या बहुत कुछ करते हैं! वे शायद दुनिया के एकमात्र ट्रिपल ऐम्प्युटी हैं जो विकलांग और गैर विकलांग लोगों के लिए एक सफल जिम ट्रेनर और वेलनेस कोच हैं।

"मेरी तरह, कई ऐसे हैं जो अपने लिए उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने के लिए सभी बाधाओं से लड़ते हैं। जब आप खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनने के लिए काम करते हैं और यह दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत और रोल मॉडल बन जाते हैं, यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। जब आप इसके लिए पहचाने जाते हैं, तो आपका सपना साकार हो जाता है।"

बिना दोनों पैरों के, और सिर्फ एक हाथ के साथ, टिन्केश को 90 प्रतिशत विकलांगता है। उनका जन्म जून 1993 को झज्जर, हरियाणा में हुआ था। नौ साल की उम्र में, अपने घर की छत पर पतंग उड़ाते समय उन्हें 11,000 वोल्ट का बिजली का झटका लगा। उनके शरीर में तीव्र जलन हुई थी। उन्हें स्थानीय अस्पताल और फिर वहां से स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, रोतक (Postgraduate Institute of Medical Sciences, Rothak) ले जाया गया। दुर्भाग्य से, पीजीआई ने शुरू में यह कहते हुए उन्हें बरती करने से इनकार कर दिया कि उनका जीवित रहने की संभावना नहीं है, और इसके कारण चार कीमती घंटे बर्बाद हुए।

चार महीने के बाद उन्हें अस्पताल से रिहा कर दिया गया, और उनके घावों का इलाज घर पर किया गया था, और प्रतिदिन पट्टियाँ बदल जाती थीं। उन्होंने फिर से पढ़ाई जारी किया, उनकी माँ ने उन्हें स्कूल ले जाय करती थी। इलाज में देरी के कारण उन्हें ग्यारह सर्जरी से गुज़ारना पड़ा औरउन्होंने अपने दो पैर और एक हाथ खो दिया। इससे भी बुरी प्रतिक्रियाएँ उन्हें मिलीं। "लोग मेरे माता-पिता को कहते थे कि अगर मैं मर गया होता तो बेहतर होता।" हालांकि, वे संतुलित रहे और पढ़ाई में ध्यान देते हुए 2015 में वाणिज्य की डिग्री हासिल की।

प्रारंभ में, टिन्केश को लकड़ी के पैर लगाया गया था। यह भरी थे और इनमे चलने के लिए मजबूत मांसपेशियों की आवश्यकता थी और मोठे मोज़े पहनने के बावजूद ये त्वचा में घिसते थे। बाद में, उन्हें जयपुर फुट लगाया गया और यह थोड़ा बेहतर लगने लगा। उन्होंने कक्षाओं में भाग लेने के लिए उन्हें दिल्ली आने पड़ा । तब तक, शारीरिक गतिविधि की कमी के कारण टिन्केश थोड़ा मोटा हो गए।

टिन्केश ने अपनी जिंदगी को बदलने का फैसला लिया। उन्होंने नजफगढ़ के एक स्थानीय जिम में व्यायाम करना शुरू किया। उन्हें लोगों की ताना सुननी पड़ी, जैसे "आपको सिर्फ एक हाथ मिला है और अब आप उसे भी तोड़ने जा रहे हैं।" टिन्केश ने उन्हें नजरअंदाज कर दिया और दौड़ना भी शुरू किया और वजन कम करना शुरू किया।

संयोग से, उनके इलाके में एक नया जिम, ईएफसी एनर्जी फिटनेस क्लब खोला गया और इसके मालिक दलबीर सिंह गहलोत ने टिन्केश को प्रोत्साहित किया। उनके समर्थन से, उन्होंने ब्लेड रनरों के साथ मैराथन दौड़ना शुरू किया। एक व्यावसायिक चिकित्सक, जेसिका थ्रेशटन ने ब्लेड के लिए एक भीड़ वित्त पोषण अभियान चलाया, जिसकी लागत 10 लाख रुपये थी। लेकिन वे केवल एक लाख रुपये ही जुटाा पाए। टिन्केश ने इस धन के एक हिस्से को बंजी जंप करने के लिए उपयोग करने का फैसला

किया और बाकी अपने माता-पिता को दे दिया।

इस बीच टिन्केश सोशल मीडिया पर दार्जिलिंग की एक महिला सुमी श्रेशता से मिले , जिन्होंने टिन्केश को बंजी जंप करने में मदद की थी, और टिन्केश के लिए एक आयातित प्रोस्थेटिक लेग के लिए भीड़ वित्त पोषण अभियान की स्थापना की। इसने आदित्य मेहता फाउंडेशन के आदित्य मेहता, एक पैरा साइकिल चालक जो एथलीटों को प्रायोजित और प्रशिक्षित करते हैं, का ध्यान आकर्षित किया। टिन्केश ने बीएसएफ द्वारा व्यवस्थित फाउंडेशन के प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेना शुरू किया।

2016 में, टिन्केश, सलिल जैन, एक प्रोस्थेटिक इंजीनियर जो ऐम्प्युटी को प्रोस्थेटिक पैरों का फिटमेंट और पुनर्वास करते हैं, द्वारा अपने लिए प्रोस्थेटिक पैर लगाने के लिए पुणे आये। टिन्केश के रवैये से प्रभावित होकर, उन्होंने टिन्केश को अपने घर से के पास ही एक अपार्टमेंट दिया, जिसमे टिन्केश दूसरे ऐम्प्युटी विक्की मेहरा के साथ रहने लगे।

उन्होंने टिन्केश को रोगियों को परामर्श देने की अंशकालिक नौकरी भी दिया और टिन्केश को अपने नए कृत्रिम अंगों का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण दिया। उन्होंने टिन्केश को सलाह दी कि वह शारीरिक गतिविधि पर केंद्रित नौकरी खोजें, क्योंकि वह इसके बारे में बहुत भावुक थे।

जब टिन्केश एक दोस्त के साथ एक रेस्तरां गए वहाँ उनकी मुलाकात, पुणे के एक उद्यमी अमोल खिलारे से हुआ जिन्होंने टिन्केश को अपने ब्रांड हर्बालाइफ के लिए जिम इंस्ट्रक्टर के रूप में काम करने के लिए आमंत्रित किया।

एडवेंचर्स बियॉन्ड बैरियर (Adventures Beyond Barriers) की रैपलिंग और ट्रेकिंग इवेंट्स के दौरान टिन्केश की मुलाकात स्मिता गौतम से हुई। स्मिता ने टिन्केश की मदद करने का फैसला किया और रहने के लिए अपने घर ले आई। स्मिता ने उन्हेंआई.येन.ऍफ़.यस (इंस्टिट्यूट ऑफ़ नुट्रिशन एंड फिटनेस - Institute of Nutrition and Fitness Sciences) में एक कोर्स करने के लिए प्रोत्साहित

किया। उन्होंने टिन्केश को तैराकी और निशानेबाजी से भी परिचित कराया। स्मिता कहती हैं,'' वह महत्वाकांक्षी और बहुत मेहनती है। वह जानता है कि वह क्या चाहता है, और उसे लगता है कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो वह नहीं कर सकता।”

क्रॉस स्ट्रेंथ फिटनेस क्लब, जहाँ पर टिन्केश काम करते हैं, में उनका उपनाम 'विल’ (Will) है। यह उनके आत्मविश्वास, समर्पण और फोकस की अभारोक्ति है। इस जिम के निदेशक भूषण ' बएड(Bad)’ दकाठे कहते हैं," जब विल जिम में है, अन्य लोग अधिक अनुशासित और प्रतिबद्ध हैं।" टिन्केश एक 'ग्रुप बैच विशेषज्ञ ’है, जो जिम में लोगों के समूहों में ट्रैन करते हैं। टिन्केश खुद 80 किलोग्राम के साथ स्क्वाट्स और 120 किलोग्राम के साथ लेग प्रेस करते हैं! टिन्केश एक स्थानीय अस्पताल पुनर्वास इकाई में स्वयंसेवक भी हैं।

टिन्केश कहते हैं “मेरी तरह, कई ऐसे हैं जो अपने लिए उत्कृष्टता के उच्चतम स्तर को प्राप्त करने के लिए सभी बाधाओं से लड़ते हैं। जब आप खुद का सबसे अच्छा संस्करण बनने के लिए काम करते हैं और यह दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत और रोल मॉडल बन जाते हैं, यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। जब आप इसके लिए पहचाने जाते हैं, तो आपका सपना साकार हो जाता है।”

एक नटखट मुस्कान एक साथ टिन्केश कहते हैं, "आज भी, मैं बहुत बड़ी चुनौतियों का सामना करता हूँ। वे मेरे जागने के उसी पल से शुरू होते हैं। ये मेरे कृत्रिम पैरों को ढूंढ़ने और उन्हें लगाने से शुरू होते हैं।" जब आप उन्हें पूरे आत्मविश्वास और सकारात्मकता के साथ आपसे मिलने आते देखते हैं , तो आप महसूस करते हैं कि यही रवैया उनकी ताकत है; इसी ने उन्हें कुछ बहुत कुछ हासिल करने के लिए , उनके सामे आये हर अवसर का उपयोग करने और नए अवसरों की तलाश करने को प्रेरित किया।

READ YOUR FAVOURITE MAGAZINE ON THE GO!

SUBSCRIBE TO YOUR E-COPY AT **WWW.JFWONLINE.COM/SHOP**

jfw jfwmagofficial jfwmagazine JFW **www.jfwonline.com**

SOUTH INDIA'S LEADING MAGAZINE AND DIGITAL BRAND FOR WOMEN

रक्षिता राजू

केविनकेयर एबिलिटी मास्टरी अवार्ड्स

18 की आयु के इस युवती के कदम पर एक अरब भारतीयों की उम्मीद टिकी हुई है, क्योंकि रक्षा राजू 2020 के पैरालिम्पिक्स में 1500 मीटर ट्रैक इवेंट में स्वर्ण पदक जीतने पर तुली है। उसका अभूतपूर्व ट्रैक रिकॉर्ड बताता है कि वह निश्चित रूप से इस मुकुट को भी जीतेगी!

यह युवती 2020 टोक्यो पैरालिम्पिक्स के लिए क्वालीफाई हुयी है, और 2018 इंडोनेशिया में एशियाई पैरा-गेम्स में 1500 मीटरमें स्वर्ण पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया है, जिसके लिए उन्हें प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विशेष रूप से सराहना किया, जिसके कारण बहुत खुश और गर्व महसूस कर रही है।

रक्षिता एशियन पैरा-गेम्स में ट्रैक इवेंट में स्वर्ण जीतने वाली पहली दृष्टिहीन महिला हैं। इसके बाद इन्होने भारत और विदेशों में ट्रैक इवेंट्स के लिए कई पदक जीते हैं, जिसमें 2019 पैरा एथलेटिक्स ग्रां प्री, पेरिस में 1500 मीटर ट्रैक इवेंट में स्वर्ण पदक शामिल है - यह उसका पहला अंतर्राष्ट्रीय मैराथन था और 1500 मी में उन्होंने 5.55 मिनट का अच्छी टाइमिंग दिया ! स्विट्जरलैंड में हुए जूनियर विश्व चैम्पियनशिप 2019 में 1500 मीटर के साथ-साथ उन्होंने 800मीटर ट्रैक स्पर्धाओं में भी स्वर्ण पदक जीते।

संघर्षों का सामना करते हुए, कर्नाटक के चिकमंगलूर जिले के एक छोटे और दूरदराज गाँव (गुड्डनहल्ली) से पैरा एथलेटिक्स के सर्वोच्च विश्व मंच तक पहुँचना इस सीधी-सादी युवती केलिए एक अविश्वसनीय यात्रा रही है।

रक्षिता राजू ने चार साल की उम्र में अपने माता-पिता को खो दिया था। वे स्थानीय कॉफी एस्टेट में दिहाड़ी मजदूर थे। जन्म से दृष्टिहीन, और कम उम्र में माता-पिता की मृत्यु के कारण कोई भी करीबी रिश्तेदार उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी उठाना नहीं चाहते थे। उनके और उनके छोटे भाई के लिए जीवन एक प्रश्नचिह्न बन गया। उसके नानी के बहन (जो खुद मूक-बधिर है) ने उनके देखभाल की जिम्मेदारी संभाली। उन तीनों के बीच बातचीत में रक्षिता का छोटा भाई दुभाषिए के रूप में काम करता था।

जब रक्षिता लगभग नौ साल की थी, तब उसे दृष्टिबाधित बच्चों के लिए आयोजित एक आवासीय शिविर में ले जाया गया। यहाँ, उसने गतिशीलता प्रशिक्षण कौशल, ब्रेल, जीवन कौशल और एथलेटिक्स सीखा। और वह दौड़ प्रतियोगिता में उत्कृष्टता प्राप्त करने लगी। वहाँ के शारीरिक शिक्षा कोच मंजूनाथ ने उनकी योग्यता को देखा

संघर्षों का सामना करते हुए, कर्नाटक के चिकमंगलूर जिले के एक छोटे और दूरदराज गाँव (गुड्डनहल्ली) से पैरा एथलेटिक्स के सर्वोच्च विश्व मंच तक पहुँचना इस सरल युवती के लिए एक अविश्वसनीय यात्रा रही है।

और उसे प्रशिक्षण देने लगे और जल्द ही रक्षिता तालुक / जिला स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगी और उसके तुरंत बाद राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

रक्षिता कहती हैं “कक्षा 3 से मैं आशा किरण स्कूल, चिकमगलूर में पढ़ने लगी। जब मैं कक्षा 7 में थी तब मैंने खेल स्पर्धाओं में भाग लेना शुरू किया। मेरी मुख्य प्रेरणा स्कूल में मेरे सीनियर शावध थे, जिन्होंने 2014 के एशियाई खेलों में पदक जीता था। मुझे खेलों के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी और मेरे पीटी (फिजिकल ट्रेनिंग) सर मनजन्ना खेल में रुचि दिखने वाले छात्रों को नेशनल्स में भाग लेने के लिए हर साल दिल्ली ले जाते थे। मैंने कहीं भी यात्रा नहीं की थी और मैं यात्रा करना चाहती थी। जब मुझे दिल्ली की यात्रा करने का मौका मिला, मैंने 2016 में राष्ट्रीय स्तर पर भाग लिया और 200 मीटर स्पर्धा में रजत पदक के अलावा 400 मीटर ट्रैक स्पर्धा में अपना पहला स्वर्ण पदक जीता। इसके बाद, मैंने नियमित रूप से नेशनल्स में भाग लेना शुरू किया।

2017 के नेशनल्स के दौरान - राहुल बालकृष्ण, एक युवा राष्ट्रीय स्तर के एथलीट रक्षिता से मिले और उन्होंने रक्षिता के क्षमता को पहचाना और उसे प्रसिक्षण देने का फैसला किया।

इसके तुरंत बाद, राष्ट्रीय एथलीट -राहुल, गोविंद सोलंकी, सौम्या सावंत - एक साथ जुटे और उन्होंने रक्षिता को उसकी पूरी क्षमता को बाहर लाने में मदद करने का दृढ़

संकल्प लिया। उनमें से, सौम्या, उसकी देखभाल करने वाली और मार्गदर्शक होने के लिए सहमत हुई। 2018 की शुरुआत में उन्होंने रक्षिता को बंगलौर ले आए।और राहुल ने अपनी पैसे से सौम्या और रक्षिता को रहने के लिए एक फ्लैट किराए पर लिया, और साथ ही उनकी डाइट, यात्रा, शिक्षा (ब्रेल मैटीरियल और ट्यूशन खर्च), ट्रेनिंग और व्यक्तिगत खर्च को संभाला।

रक्षिता का अनुशासित आहार, वर्कआउट और प्रशिक्षण शुरू हुआ।"जब राहुल सर मुझे 2018 में बेंगलुरु ले गए, तो मैंने सोचा था कि यह नेशनल के अभ्यास के लिए था", एक मुस्कराहट के साथ रक्षिता कहती है। “उसके बाद, राहुल सर ने मुझे प्रशिक्षण दी, और मैं पेरिस ग्रांड प्री में भाग लेने के लिए क्वालीफाई हुयी। मुझे वित्तीय सहायता की तलाश थी और सूर्यकला मेघनाथन ने इसके लिए मेरा समर्थन किया।” सूर्यकला तब राहुल के अधीन प्रशिक्षण ले रही थीं।

उनके शिक्षा को भी नजरअंदाज नहीं किया गया। रक्षिता, सौम्या और राहुल के मार्गदर्शन में आत्म-अध्ययन द्वारा अपनी शिक्षा का अनुसरण कर रही है। वह वरिष्ठ स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा को एक स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में लिखने की तैयारी कर रही है। रक्षिता की दोनों आँखों में बहुत कम दृष्टि है, और उसे केवल प्रकाश और छाया दीखता है। वह कहती हैं "नौकरी पाने के बाद, मैं अपनी दादी और छोटे भाई का समर्थन करूंगी।"

आज, रक्षिता के दिन में चार-चार घंटे के दो प्रशिक्षण सत्र शामिल हैं। उसकी इच्छा है पैरालंपिक स्वर्ण पदक जीतकर अपने कोच, अभिभावक, संरक्षक, दादी और अपने देश को गौरवान्वित करना है।

वह कहती हैं, "मुझे बहुत खुशी है कि लोग मेरे प्रदर्शन को पहचान रहे हैं और मुझे पुरस्कार दे रहे हैं। विकलांग लोगों में कुछ विकलांगता हो सकती है, लेकिन उनमें मानसिक शक्ति बहुत अधिक होती है।कड़ी मेहनत, ईमानदारी और एकल-दिमाग के फोकस के लिए उसकी क्षमता को

जानने के बाद, ऐसा लगता है कि रक्षिता राजू ने अंतरराष्ट्रीय खेलों में एक शानदार करियर की शुरुआत की है।

*** कैविनकेयर एबिलिटी अवार्ड्स 2020 के प्राप्तकर्ताओं के प्रोफाइल के लेखक हेमा विजय**

UNITED IN
THE FIGHT
AGAINST
CYBER THREATS.
Norton
LifeLock

एक नया परिदृश्य

एक ऐसा अवसर जिस के लिए उम्मीदवार, कॉरपोरेट्स और टीम ऐबिलिटी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे एंप्लॉयबिलिटी 2019 जिसके दौरान कई करियर बने, नेटवर्क स्थापित हुआ और क्षितिज का विस्तार हुआ।

हवा उत्साह से लबालब थी! एम्प्लॉयबिलिटी 2019, चेन्नई के ट्रेंडसेटिंग जॉब फेयर में उत्सुक विकलांग उम्मीदवारों की एक लंबी धारा कतार थी। दक्षिणी राज्यों के अलावा झारखंड, छत्तीसगढ़, गुजरात, उत्तर प्रदेश और असम जैसे दूर दराज के स्थानों से उम्मीदवारों आए थे। अग्रणी कंपनियों (जिसमे कॉर्पोरेट क्षेत्र के सबसे बड़े नाम शामिल थे) के टैलेंट अक्वसिशन पर्सनेल (talent acquisition personnel) के पंजीकरण के जगह में भी ऐसा ही माहौल था। माइक्रोसॉफ्ट, पे पाल, एच.सी.एल टेक्नोलॉजीज, आदित्य बिरला ग्रुप, रिलायंस, विप्रो, एक्सेंचर, वर्चुसा, वेरिज़ोन, मास्टरकार्ड और अर्न्स्ट एंड यंग आदि इनमे शामिल है। एंप्लॉयबिलिटी 2019 - जिसके दौरान कई करियर बने - एक ऐसा अवसर जिस के लिए उम्मीदवार, कॉरपोरेट्स और टीम ऐबिलिटी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे।

मेले के उद्घाटन के दौरान एबिलिटी फाउंडेशन के संस्थापक जयश्री रवींद्रन ने कहा, "हम एक ऐसे दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब इस तरह के मेलों की आवश्यकता नहीं होगी"। एक दिन जब विकलांग लोगों को कॉर्पोरेट दुनिया में उनका उचित स्थान मिलेगा, नौकरी के मेलों से लेकर कार्यक्षेत्र और बोर्डरूम तक। उन्होंने मेले में भाग लेने वाली फर्मों को “समान अवसर वाले नियोक्ता होने के गर्व से विकलांग व्यक्तियों को नौकरी देने के लिए प्रोत्साहित किया न की उसके विकलांग होने पर सहानुभूति भाव से।” उसने कहा कि किसी भी पद के लिए विकलांग व्यक्तियों की योग्यता, किसी भी तरह से, किसी भी गैर-विकलांग व्यक्ति की योग्यता से कम नहीं थी, और प्रत्येक उम्मीदवार की योग्यता कंपनी द्वारा दिए गए नौकरी विवरण के साथ मेल खाती थी और केवल उपयुक्त उम्मीदवार साक्षात्कार के लिए भेजे गए थे। एबिलिटी

मेले में भाग लेने वाली लगभग हर कंपनी - पे पाल, माइक्रोसॉफ्ट से लेकर आदित्य बिड़ला ग्रुप तक - ने दावे के साथ कहा कि एम्प्लॉयबिलिटी 2019 अच्छी तरह से आयोजित नौकरी मेलों में से एक है।

फाउंडेशन के कंसल्टेंट और लायंस क्लब ऑफ पाडीशेनॉय नगर (Lion's Club of PadiShenoy Nagar - LCPS- एल.सी.पी.एस) के सदस्य एस. कृष्णास्वामी ने कंपनियों को सबसे उपयुक्त प्रतिभा वाले उम्मीदवार को नौकरी पर रखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा "अगर यह नहीं हो पाता, तो उम्मीदवारों को एक गंभीर साक्षात्कार का अनुभव और ईमानदार प्रतिक्रिया दें जो उन्हें अपने करियर में अगले चरणों के लिए तैयार करने में मदद करेगा"। एक कॉर्पोरेट इकाई की मुख्य चिंता शेयरधारक को रिटर्न देना है। एक कंपनी को सहानुभूति के आधार पर किसी उम्मीदवार को क्यों देखना चाहिए?" पूछते हैं एलएन. सुंदर बालासुब्रमण्यम, अध्यक्ष, लायंस क्लब ऑफ पादी शेनॉय नगर। उन्होंने कॉरपोरेट्स से कहा, " सहानुभूति के नजरिए से विकलांग उम्मीदवारों को नौकरी देने के बारे में मत सोचिये। एक उम्मीदवार कंपनी के लिए क्या मूल्य जोड़ सकता है और कंपनी वापस क्या भुगतान कर सकती है, इस परिप्रेक्ष्य से देखें"। इसी तरह, उम्मीदवारों को सलाह दी गई कि वे अपना सर्वश्रेष्ठ दें, सीधा और सकारात्मक रहें, और सहानुभूति की अपेक्षा न करें।

प्रतिभाशाली स्नातक विकलांगों को अपने कंपनी में नियुक्त करने के लिए 10 विभिन्न क्षेत्रों की 30 से अधिक कंपनियों ने मेले में भाग लिया। मेले में भाग लेने वाली लगभग हर कंपनी - पे पाल, माइक्रोसॉफ्ट से लेकर आदित्य बिड़ला ग्रुप तक - ने दावे के साथ कहा कि एम्प्लॉयबिलिटी 2019 अच्छी तरह से आयोजित नौकरी मेले में से एक है। उम्मीदवारों द्वारा आयोजित उच्च-श्रेणी की योग्यता से वे बहुत प्रभावित हुए। "हमने कम से कम 25 उम्मीदवारों का साक्षात्कार किया और पाया कि वे सभी बेहद प्रतिभाशाली और प्रतिस्पर्धी हैं", वेरिजोन (Verizon) से प्रतिभा अधिग्रहण (Talent acquisition) टीम ने कहा। इसी तरह, एच.सी.एल टेक्नोलॉजीज (HCL Technologies) की प्रतिभा अधिग्रहण टीम ने हमें उल्लेख किया, "हम उन उम्मीदवारों के कौशल और योग्यता से बेहद प्रभावित थे, जिन्हें हमने एम्प्लॉयबिलिटी 2019 में साक्षात्कार दिया था"।

हमें पता चला कि संवेदीकरण हो रहा है।

"हमारा परिसर बहुत अभिगम्य है। कम दृष्टि वाले कर्मचारियों के लिए रैंप और लचीले काम शिफ्ट से लेकर सुलभ सॉफ्टवेयर तक, हम अपने विकलांगों कर्मचारियों को उचित आवास प्रदान करते हैं", एचसीएल टेक्नोलॉजीज के

MEETING ROOM 3
30
QUANTRIUM

MCKINSEY & COMPANY

एचआर प्रतिनिधि ने सूचित किया। असल में, पेपाल में एक 'एक्सेसिबिलिटी लैब' (Accessibility lab) भी है। पेपाल के श्रीनिवासन ने हमें सूचित किया कि यह प्रयोगशाला उनके सिस्टम और प्रक्रियाओं की अभिगम्यता को उन्नयन बनाने में लगी रहती है।

एक जाने माने कंसल्टिंग फर्म के प्रतिभा अधिग्रहण के प्रवीण और गायत्री ने उम्मीदवारों के आत्म विश्वास और स्पष्टता पर प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने कहा, "उम्मीदवारों को अपने करियर के बारे में बहुत स्पष्ट विचार था और वे जो चाहते थे उसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में में थे।" "जबकि संचार एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें कुछ उम्मीदवारों को सुधार की आवश्यकता है, ये सभी तकनीकी रूप से योग्य हैं", माइक्रोसॉफ्ट से प्रतिभा अधिग्रहण टीम ने कहा।

इस नौकरी मेले में सबसे प्रभावशाली उम्मीदवारों में से एक मिरांडा टॉमकिंसन था, जो बधिरान्ध था। विशेष शिक्षा में मास्टर डिग्री के साथ सशस्त्र (नियमित स्ट्रीम के माध्यम से इस डिग्री को प्राप्त करने के लिए देश का पहला बधिरान्ध व्यक्ति), उन्होंने अपनी योग्यता और अभिव्यक्ति से इस मेले में सबको आश्चर्यचकित कर दिया। उन्होंने हमें बताया, "रेफ्रेसेबल ब्रेल गैजेट जो ब्रेल में भाषण को परिवर्तित करता है के माध्यम से मेरे साथ दो-तरफ़ा संचार पूरी तरह से संभव है।" आजकल, मिरांडा विश्वविद्यालय के छात्रों को पढ़ाते हैं और खुद एक पुस्तक लिखने के लिए शोध भी कर रहे हैं।

"आज, कॉर्पोरेट, विकलांगों काम पर रखने के लिए तैयार हैं क्योंकि आज कॉर्पोरेट क्षेत्र में विविधता बहुत सराहा जाता है", इस कार्यक्रम के लिए एबिलिटी फाउंडेशन के साथ भागीदारी करने वाले नेशनल एच.आर.डी (National HRD-NHRD Network Chennai Chapter) नेटवर्क चेन्नई चैप्टर के समन्वयक, प्रसन्नकुमार पचैयप्पन ने कहा। विकलांग उम्मीदवारों के लिए विशेष नौकरी मेलों की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए एन.एच.आर.डी के सतीश ने कहा "फिर भी, हम नियमित नौकरी मेलों में ज़्यादा विकलांग उम्मीदवारों को नहीं देकते हैं।"

हलवा का सबूत खाने में है! एम्प्लॉयबिलिटी 2019 एक उच्च सफलता के साथ सम्पन्न हुआ! कई उम्मीदवारों को तुरंत वहीँ पर नियुक्ति मिली। कई और उम्मीदवार आगे के साक्षात्कार के लिए चुने गए। यह नौकरी मेला अर्हता प्राप्त विकलांग स्नातकों को सामान अवसर प्रदान करने वाले योग्य नियोक्ताओं के साथ मिलाने के बारे में था। कई उम्मीदवार 30 से अधिक अग्रणी नियोक्ताओं से मिले और हमे पूर्ण विश्वास है कि इस नौकरी मेले ने एक भेदभाव रहित मंच प्रदान किया।

Kesar 14 Years of Gifting Happiness Since - 2002
Widest Range of Corporate Gifts
Trophies & Awards in India
Trophies starting from ₹50 to ₹50000
Logo Here
Awarded as The Best Gifts & Recognition Store by Times of India
Gifts Starting from ₹5 to ₹5 Lakhs
Compare Our Prices, Quality & Services.
Kesar® GIFT MART
For all Reasons & Seasons
www.kesar.in
Divine Gifts | Trophies & Awards | Corporate & Personalized Gifts | Souvenirs | Stationery | Bags & Apparels | Houseware | Toys
Our Showrooms
Cathedral Road, Chennai M : +91 9383 9383 78
Avinashi Road, Coimbatore M : +91 9383 9383 91
Hyundai Factory, Sriperumbudur M : +91 9383 9383 95
Corporate Office : Kesar Gift Mart (P) Ltd. 11, Lake Area, 7th Cross Street, Behind Valluvar Kottam
Nungambakkam, Chennai - 600034, India. P : 044 - 2817 0231. E : vishal@kesar.in
Bengaluru : +91 9383 9383 91 | Delhi : +91 9383 9383 95 | Mumbai : +91 9383 9383 97 | Hyderabad : +91 9383 9383 99
Company Owned Brands
Kesar DIVINE EXPRESSIONS
ovation INSPIRING EXCELLENCE
Glee TOUCH HEARTS
P2P PEN TO PAPER
It's a Small World
KRIA LET'S INSPIRE
Members of
GJF
rai RETAILERS ASSOCIATION OF INDIA
AWARDS and PERSONALIZATION ASSOCIATION
Ample Car Parking Available.
Customer Care: +91 9383 9383 93
Shop Online@www.kesar.in

आगंतुकों के विचार

"एम्प्लॉयबिलिटी में यह मेरा पहला अनुभव था। इतनी कंपनियों और उम्मीदवारों को नौकरी मेले में भाग लेते देखना रोमांचक था। देश के विभिन्न कोनों से मेले में भाग लेने के लिए आये उम्मीदवारों को देखते हुए यह वास्तव में अखिल भारतीय मेला था। हमारे कार्यक्रम स्थल पर पहुँचने के पहले से ही उम्मीदवार मेले की शुरुआत के लिए स्थल पर प्रतीक्षा कर रहे थे। विभिन्न कॉरपोरेट साक्षात्कारकर्ताओं से मिलने के लिए विभिन्न बूथों की ओर उम्मीदवारों का मार्गदर्शन करने केलिए उत्साही स्वयंसेवकों की एक बड़ी संख्या को देखना अद्भुत था। प्रत्याशियों के चेहरे पर मुस्कुराहट के साथ कार्यक्रम स्थल से वापस जाते हुए देखना बहुत ही संतोषजनक था।

"यह पहला नौकरी मेला था जिसमें मैंने भाग लिया और मैं कभी इस अनुभव को कभी भी भूल नहीं पाऊंगा। मैं समझ गया कि विकलांग लोग केवल हमारे दिमाग में विकलांग हैं, लेकिन उनकी आत्माएं किसी और की तरह स्वतंत्र और शक्तिशाली होती हैं। इस घटना ने यह स्वीकार करने के लिए विवश किया कि उन्हें कभी भी हमारी सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है, बस उन्हें एक उत्साहजनक प्रोत्साहन चाहिए, जो उन्हें महान ऊंचाइयों तक पहुँचने के लिए प्रेरित करेगा। इस उल्लेखनीय अवसर के लिए एबिलिटी फाउंडेशन का धन्यवाद। चलिए सब मिलकर एक समावेशी समाज का निर्माण करें।

"अगर नौकरी मेले अच्छी तरह से संगठित नहीं हों तो नियोक्ताओं और उम्मीदवारों दोनों के लिए अराजक बन सकता है । मैंने पहले भी नौकरी मेलों में उम्मीदवार, इवेंट ऑर्गेनाइज़र, स्वयंसेवक और नियोक्ता दल के सदस्य के रूप में पहले भाग लिया है। मैं कह सकती हूँ कि एम्प्लॉयबिलिटी 2019 सबसे अधिक संगठित कार्यक्रमों में से एक है जिसमे मैंने भाग लिया । कार्यक्रम के आतंरिक दल का हिस्सा होने के नाते, हम सभी कार्यक्रम के मूल उद्देश्य को पूरा करने में लगे थे - संभावित नियोक्ताओं से मिलने के लिए विकलांग उम्मीदवारों को एक गैर-भेदभावपूर्ण मंच प्रदान करना। उत्साह और आत्मविश्वास से भरे उम्मीदवारों को नियोक्ताओं से बात करते हुए देखना एक अद्भुत अनुभव था। स्कूल के बच्चों को भी उत्साह से उम्मीदवारों और नियोक्ताओं का मार्गदर्शन करते देखना आनंदमय था। मैंने महसूस किया कि यह अवसर उन्हें न केवल कुछ नए कौशल हासिल करने के लिए मूल्यवान होगा, बल्कि विकलांगों के बारे में संवेदनशील होने में भी मदद करेगा।

With Best Compliments From

SUPER AUTO FORGE PRIVATE LIMITED

Forging the head into future

Specialists in:
Cold / Warm Forged and Precision Machined
Steel & Aluminum Components

ISO 14001: 2015
Certified by IRQS

MGMT. SYS.
RvA C 071

OHSAS 18001:2007
Certified by IRQS

MGMT. SYS.
RvA C 071

IATF 16949:2016
Certified by IRQS

Website: www.superautoforge.net

EmployABILITY®

एंप्लॉयबिलिटी - विकलांग व्यक्तियों के लिए समान रोजगार के अवसर

एक नौकरी मेला जो एक असंदिग्ध आंदोलन बन गया है!

वर्त्तमान

17 दिसंबर, 2019. स्थान: चेन्नई। अवसर: एंप्लॉयीबिलिटी 2019, एबिलिटी फाउंडेशन के जॉब फेयर का 10 वां संस्करण, जो 2004 में अपनी पहले संस्करण से ही एक पथ प्रवर्तक रहा है।

पूर्वदृश्य

19 दिसंबर, 2004. स्थान: चेन्नई। अवसर: भारत में पहली बार स्नातक विकलांगों के लिए विशेष रूप से नौकरी मेले का आयोजन किया गया। एबिलिटी फाउंडेशन की एंप्लॉयबिलिटी 2004 एक देश का पहला ऐसा कार्यक्रम था जिसमे अर्हता प्राप्त विकलांग व्यक्तियों को उनके विकलांगता के आधार पर नहीं बल्कि उनके योग्यता के आधार पर बड़े-बड़े कंपनियों द्वारा इन कंपनियों में काम करने के लिए बराबर का अवसर दिया जाता है।

मार्ग में अग्रसर

1000 आवेदकों से चुने गए 800 विकलांग आवेदकों ने इस पहले अग्रणी रोज़गार मेले में भाग लिया, जिसमे बैंक और सॉफ्टवेयर सहित 32 कॉरपोरेट कम्पनियाँ बाग़ ले रहे थे। इसके पहले कहीं भी हर उम्मीदवार की प्रोफाइल को कंपनियों की आवश्यकताओं के आधार पर चयन नहीं किया जाताथा। इसके साथ, हमने सुनिश्चित किया कि प्रत्येक योग्य उम्मीदवार को उसी दिन छह से आठ साक्षात्कारों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। कई उम्मीदवारों को उसी दिन प्लेसमेंट ऑफर मिला। उस दिन उनमें से हर एक को कई कॉरपोरेट्स के साथ साक्षात्कार का मौका मिला, साथ ही उनके संचार कौशल को सुधारने, नौकरी के बाजार को समझने और अपने पेशेवर नेटवर्क का विस्तार करने का मौका मिला। भाग लेने वाली कंपनियों के लिए - न केवल वे आवश्यक प्रतिभा वाले उम्मीदवारों को पा सके, वे विकलांग उम्मीदवारों की नौकरी-तत्परता के बारे में भी जान पाए और इस हद तक संवेदनशील बन गए कि वे अगली बार एक विकलांग उम्मीदवार को प्राप्त करने के लिए अधिक उत्साहित हो गए। लगभग हर एक व्यक्ति जो आयोजन स्थल पर आया था या इस मेले के बारे में सुना था, विकलांग लोगों के बीच मौजूद योग्यता के बारे में संवेदनशील हो गया था जो

विकलांग लोगों के बीच मौजूद थी और यह जान गए कि विकलांग लोग को दया भाव नहीं, बल्कि समान अवसरों और उचित अभिगम्यता की ज़रुरत हैं।

वर्तमान दृश्य

आज, 15 साल और कई संस्करणों के बाद, विकलांग व्यक्तियों के लिए नौकरी मेलें - एक ऐसा विचार जिसने सभी का ध्यान खींचा है - एक बहुत ही संगठित और प्रतिकृति कार्यक्रम बन गई है। जयश्री रवींद्रन, संस्थापक निदेशक, एबिलिटी फाउंडेशन के मुताबिक, " यह अब अनूठा नहीं रहा और कॉरपोरेट रिक्रूटमेंट का आदर्श बन गया, और हम यही चाहते थे, हालांकि आज तक, किसी ने भी कंपनियों की आवश्यकताओं के आधार पर उम्मीदवार की प्रोफाइल का चयन नहीं किया है।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि भारत के आबादी की लगभग 5-6% विकलांगता से प्रभावित है, हालांकि आधिकारिक आंकड़ों ने इसे 2.2-2.3% (सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंकरालय की जुलाई-दिसंबर 2018 के राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार - Ministry of Statistics and Programme Implementation’s National Sample Survey) रखा है। जाहिर है, यह जानने के लिए एक सर्वेक्षण की आवश्यकता नहीं है कि, बड़े पैमाने पर, विकलांग लोग अभी भी कॉर्पोरेट परिदृश्य में नहीं हैं, और इसलिए इस तरह के नौकरी मेलों की आवश्यकता आज भी है।

यात्रा

ये सब कैसे शुरु हुआ? एम्प्लॉयबिलिटी अस्तित्व में आया, क्योंकि हममें से हर किसी को कुछ ऐसा करने की आवश्यकता है, जो हमारी प्रतिभा और रुचियों को बढ़ावा देता है; समाज के लिए योगदान देने में, और सबसे ऊपर - आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए मदद करता हो। हम में से किसी की तरह, विकलांग लोगों को भी जीवन के इस मूलभूत पहलू को आगे बढ़ाने के लिए अवसरों की आवश्यकता होती है।

एबिलिटी फाउंडेशन की प्लेसमेंट विंग, जो 1997 में

स्थापित हुई, ने हमेशा आहर्ताप्राप्त विकलांग उम्मीदवारों को उन कंपनियों के साथ मिलाया, जो विकलांगों को उनके योग्यता के अनुसार नौकरी का अवसर देने के लिए तैयार थे। जयश्री रवींद्रन याद करती हैं, "हमारी अपनी प्लेसमेंट विंग से आगे जाने और बड़े पैमाने पर देश के हर कोने तक पहुँचने (कॉरपोरेट्स और उम्मीदवार दोनों) और हमारी सेवाओं का लाभ व्यापक लोगों तक पहुँचाने की जरूरत थी, जिसके कारण हमारी नौकरी मेले 'एम्प्लॉयबिलिटी' की शुरुआत हुयी। लॉयन क्लब ऑफ पाडी शेनॉयनगर (LCPS) के सदस्य और एबिलिटी फाउंडेशन के सलाहकार, एलयेन.(Ln.) श्री एस. कृष्णास्वामी और उस समय के अध्यक्ष एल येन.एस. शंकरन ने इस विचार का समर्थन किया। पहली एम्प्लॉयबिलिटी हुई और उसके बाद जो हुआ वह इतिहास है।

आगे के हर संस्करण ने विकलांग लोगों की योग्यता और नौकरी की तत्परता पर दुर्भावनापूर्ण पूर्वाग्रहों को चुनौती दी। इसने विकलांगता रूढ़ियों को तोड़ दिया, विकलांगता के मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाई और समानता के लिए कॉर्पोरेट दृष्टिकोण में जागरूकता को बढ़ाया। पहले विकलांग व्यक्तियों को केवल विकलांगता के आधार पर नौकरी से वंचित कर दिया जाता था और समान नौकरियों के लिए कम वेतनमान दिया जाता था। इस परिदृश्य से हटकर अब विकलांग लोगों को मूल्यवान कर्मचारी के रूप में पहचाना जाता है, जो सामान योग्यता वाले अपने गैर-विकलांग साथियों की तुलना में कंपनी के साथ दीर्घकाल तक काम करते हैं, ज़्यादा उत्पादक, वफादार, और उत्सुक होते हैं।

कॉर्पोरेट उत्साह

यही कारण है कि कंपनियाँ एम्प्लॉयबिलिटी के हर संस्करण में भाग लेना चाहते हैं। एम्प्लॉयबिलिटी के नियमित प्रतिभागियों में से एक, जेपी मॉर्गन के मणिकंडन और उनकी टीम, ने हमें बताया, “हम योग्यता के आधार पर उमीदवारों को चुनते हैं। इसमें कोई समझौता नहीं होता है। विकलांग जोशीले, वफादार और सफलता के लिए तत्पर हैं। हमारे कार्यबल में 3% विकलांग व्यक्ति हैं।”

एबिलिटी फ़ाउंडेशन के उप निदेशक राधिका राममूर्ति बताती हैं "2009 की मंदी के दौरान भी, एम्प्लॉयबिलिटी ने कंपनियों से सामान्य उत्साही प्रतिक्रिया देखी। यह कंपनियों की प्रतिबद्धता और एम्प्लॉयबिलिटी से उन्हें प्राप्त होने वाले उम्मीदवारों के प्रतिभा का प्रमाण है।" इसके एक अन्य पहलू को रेखांकित करते हुए वे कहतीं हैं “वर्षों से हमने पाया है कि, प्रौद्योगिकी से सशक्त , उम्मीदवार अधिक आत्मविश्वास और महत्वाकांक्षी हैं। और यह तो उचित ही है। मेले में भाग लेने वाली कंपनियां भी हमारे उम्मीदवारों को काम पर रखने के बारे में आश्वस्त हैं और उन्हें वरिष्ठ पदों और परिष्कृत भूमिकाओं के लिए विचार करती हैं।”

2004 में, कंपनियों से बात करते हुए एबिलिटी के दल को कंपनियों को यह समझाने की चुनौती थी कि विकलांग लोगों के पास स्नातक स्तर (और उच्चतर) योग्यता हो सकती है। भारती शेकर, निदेशक - संचालन, एबिलिटी फाउंडेशन याद करती है “उस समय विकलांग लोगों को टेलीफोन ऑपरेटर, लिफ्ट ऑपरेटर जैसे भूमिकाओं में ही देखने की प्रवृत्ति थी, और यहाँ हम दृष्टिहीन सॉफ्टवेयर इंजीनियरों के बारे में बात कर रहे थे! मुझे याद है कि एक कंपनी ने अंतरिमतापूर्वक हमसे पूछा था कि क्या हम उन्हें सॉफ्टवेयर परीक्षण कौशल वाले उम्मीदवार से मिला सकते हैं। हमने उनसे कहा कि हमारे पास उस कौशल के साथ 40 आवेदक हैं। प्रत्याशी भी उतने ही उत्साही रहे हैं। 2014 में, राजस्थान से एक दृष्टिहीन लड़की अकेले यात्रा करते हुए एम्प्लॉयबिलिटी के लिए आयी थी। यह हमारे लिए संक्रमण को दर्शाने वाला निर्णायक क्षण था।

नियोक्ताओं के लिए, विकलांग लोगों को काम पर रखना सिर्फ उनकी विविधता और समान अवसर नीति की ओर एक और कदम नहीं था, यह भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 को बनाए रखने का एक अवसर भी था, जो एक चतुर व्यवसाय चाल भी। चित्रा श्याम सुंदर, जो 2017 में एच.सी.एल टेक्नोलॉजीज लिमिटेड में जनरल मैनेजर, डायवर्सिटी एंड इंक्लूजन थी, ने हमें बताया, "हमने देखा है कि विकलांग कर्मचारी को भावी सहायक उपकरण या

एड्स प्रदान करने से अपने समकक्षों की तरह ही प्रभावी प्रदर्शन करते हैं।" उनके पास उन लोगों के लिए जिन्होंने अभी तक समावेश की इस यात्रा को शुरू नहीं किया हो, एक सरल सुझाव है : "बस एक आत्मसात प्रक्रिया शुरू करें और आप अपनी कंपनी के पारिस्थितिकी तंत्र को बदलते और विकलांग व्यक्तियों को खूबसूरती से समायोजित होते देखेंगे , क्योंकि समावेशन केवल व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं है, बल्कि सही भी है दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।" इसी तरह, 2016 में आराधना लाल, उपाध्यक्ष - सस्टेनेबिलिटी इनिशिएटिव्स, द लेमन ट्री होटल कंपनी ने हमे बताया कि समान अवसर रोजगार नीतियां और एक समावेशी काम का माहौल लेमन ट्री होटल्स के लिए जीत का प्रस्ताव साबित हुआ है। उन्होंने विकलांग लोगों को काम पर रखने में लेमन ट्री के अनुभव का वर्णन किया, "यह एक उत्कृष्ट अनुभव रहा है, और कंपनी के लिए उत्पादकता के आंकड़े / प्रदर्शन बहुत उत्साह जनक रहे हैं। उदाहरण के लिए, गैर- विकलांग हाउसकीपिंग रूमबॉय की तुलना में विकलांग हाउसकीपिंग रूमबॉय 15% अधिक कुशल हैं और एक दिन में औसतन 16 कमरों के मुकाबले 19 कमरे साफ करते हैं।

एक स्थायी संबंध

वर्षों के दौरान, देश भर में ऐसे समान पहलों को प्रेरित करने के अलावा, एम्प्लॉयबिलिटी बहुत विस्तृत हो चुकी है और अब 24 से अधिक राज्यों से उम्मीदवार और हर क्षेत्र के कॉर्पोरेट नियोक्ताओं - सॉफ्टवेयर और बैंकिंग से लेकर विनिर्माण और डिजिटल मीडिया तक - की भागीदारी है। यह नौकरी मेला विकलांग फ्रेशर्स और पेशेवरों जो अपने पेशे में आगे बढ़ना चाहते हैं दोनों को आकर्षित करता है - दृष्टिहीन ,आर्थोपेडिक रूप से विकलांग, पोलियो, बौनापन, सेरेब्रल पाल्सी, आटिज्म, डिस्लेक्सिया, मांसपेशियों की डिस्ट्रोफी और मानसिक बीमारी वाले उम्मीदवार इसमें भाग लेते हैं। समानता यह है कि भाग लेने वाले उम्मीदवारों में से हर एक यहाँ योग्यता के आधार पर नौकरी की तलाश कर रहा है। वैसे तो, कंपनियों के साथ एबिलिटी फाउंडेशन का संबंध जॉब फेयर के साथ समाप्त नहीं होता है। जब एक विकलांग व्यक्ति को कंपनी में नौकरी मिल जाती है, फाउंडेशन जहाँ आवश्यक हो, कंपनी को सांकेतिक भाषा प्रशिक्षण प्रदान करता है, प्रौद्योगिकी के साथ-साथ रसद के संदर्भ में एक अभिगम्य वातावरण बनाने के लिए अपना विचार साझा करते हैं, और विकलांगता के व्यावहारिक मुद्दों के प्रति कंपनी को संवेदनशील बनाते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि संगठन और उम्मीदवार दोनों निश्चिन्त रह सके और एक दूसरे को विक्सित कर सके। इस बीच, एबिलिटी फाउंडेशन ने उम्मीदवारों के व्यावहारिक कौशल को बढ़ाने के लिए लिंकबिलिटी (LinkABILITY) कार्यशालाओं का संचालन करना शुरू कर दिया।

आज, ऐसे समय में जब प्रौद्योगिकी ने विकलांग लोगों के लिए लगभग हर क्षेत्र में श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले कार्य उत्पादन देने के लिए यह संभव बना दिया है, यह अक्षम्य है कि वे कॉर्पोरेट क्षेत्र में उनका पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व नहीं है। एम्प्लॉयबिलिटी और इससे प्रेरित कई नौकरी मेले, यह सुनिश्चित करेगा कि विकलांग लोगों को कॉर्पोरेट जगत में सही प्रतिनिधित्व मिले।

अर्हताप्राप्त विकलांग उम्मीदवार के लिए, उनके मनचाही नौकरी खोजने के लिए एम्प्लॉयबिलिटी सबसे अच्छी जगह है। आगे का रास्ता रोमांचक है ...

कॉर्पोरेट चिंतन

विविधता कहाँ है?

जब हम कारपोरेट कार्यबल में विकलांग व्यक्तियों के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की कमी का विश्लेषण करते हैं, तो कई सवाल सामने आते हैं।

आज, कॉर्पोरेट शब्द कोष में विविधता और समान अवसर प्रचलित शब्द हैं; विविध कार्यबल वाली कंपनियों को बेहतर और अधिक सफल कॉर्पोरेट के रूप में स्वीकार किया गया है। कार्यस्थल में विकलांग लोगों के लिए एक स्तर के खेल के मैदान और उचित आवास नीति को बढ़ावा देने वाली सरकारी निर्देश और कॉर्पोरेट नीतियां जारी हैं। आरपीडी अधिनियम 2016 एक प्रमुख परिवर्तक रहा। सहायक तकनीकी समाधानों ने विकलांग लोगों के लिए शिक्षा और रोजगार के बहुत सारे अवसर खोलने में मदद की।

यदि आप किसी भी कंपनी में विकलांग लोगों की त्वरित गिनती लेते हैं, तो आप पाएंगे कि संख्या नगण्य हैं। विकलांग लोग बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट परिदृश्य में नहीं हैं, खासकर अगर आप कॉर्पोरटे के उच्च पदों को देखते हैं।

इस बीच, 2007 के विश्व बैंक की रिपोर्ट, " पीपल विथ डिसैबिलिटीज इन इंडिया: फ्रम कमिटमेंट टू अउटकम' ('People with Disabilities in India: From Commitments to Outcomes') ने बताया कि विकलांग लोगों की रोजगार दर 1991 में 42.7 प्रतिशत थी जो गिरकर 2002 में 37.6 प्रतिशत हो गई...ऐसा क्यों?

एबिलिटी फाउंडेशन में हमारा अनुभव अलग क्यों रहा है - हम पाते हैं कि विकलांग व्यक्तियों को नियुक्त करने और उन्हें समान अवसर प्रदान करने के लिए कॉर्पोरेट तैयार हैं? एक कारक यह है कि हम कंपनियों और कर्मचारी दोनों को संवेदनशील बनाते हैं। हम इस बात पर जोर देते हैं कि विकलांगता मध्यस्थता का कोई बहाना नहीं है। इसके अलावा, हम सिफारिश करते हैं कि विकलांग लोगों को अपने जिम्मेदारी निभाने के लिए उन्हें उचित आवास और एक बराबर का मौका दिया जाए। हम विकलांग लोगों को काम पर रखने के लिए कंपनियों को प्रशिक्षण और सहायता भी प्रदान करते हैं।

ये नीतियां और प्रक्रियाएं, प्रबंधन, कर्मचारियों और संबंधित अन्य सभी के लिए स्पष्ट दिशानिर्देशों के साथ, एक नींव के रूप में काम करेंगी और एक रूपरेखा प्रदान करेंगी जिसके आधार पर हर संगठनात्मक निर्णय लिया जाएगा। यह समय के साथ कॉर्पोरेट कार्यबल में विकलांग व्यक्तियों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगा।

एक प्रणालीगत दृष्टिकोण

लगता नहीं कि कानूनी आदेश ने ज़मीनी स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। "आरपीडी अधिनियम 2016 (RPD Act 2016) कहता है कि प्रत्येक प्रतिष्ठान - चाहे वह निजी हो, सार्वजनिक हो, या एनजीओ - को अपनी समान अवसर नीति तैयार करनी चाहिए और उसे उपयुक्त विकलांगता आयुक्त को प्रस्तुत करना चाहिए, और उसे अपनी वेबसाइटों पर रखना चाहिए, और उस कार्यक्रम को लागू करना चाहिए। अगर किसी भी प्रतिष्ठान में 20 या अधिक कर्मचारी हैं तो अधिनियम जोर देता है कि उनके लिए एक संपर्क अधिकारी हों। इस तरह की औपचारिक प्रणालियाँ और प्रथाएँ, अगर एक बार निर्धारित हो जाती हैं, तो यह सुनिश्चित हो जाता है की समय के साथ-साथ, पर्याप्त संख्या में विकलांग लोगों अनिवार्य भर्ती करती हैं और उन्हें उचित आवास भी दिया जाएगा। इससे समय के साथ-साथ, कॉर्पोरेट कार्यबल में विकलांग लोगों की संख्या धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से बढ़ जाएगी। वास्तव में, यह सुनिश्चित करेगा कि लोग जो बीच में विकलांगता प्राप्त करते हैं (यह संख्या बड़ी है) कॉर्पोरेट कार्यबल से बाहर नहीं निकालेंगे। राम चरण, निदेशक, विविधता और समान अवसर केंद्र (Director, Diversity and Equal Opportunity Centre - DEOC) उल्लेख करते हैं "फिलहाल, कई कंपनियों के पास आरपीडी अधिनियम के इस पहलू को पूरा करने के लिए एक केंद्रित या व्यवस्थित दृष्टिकोण नहीं है। मुझे लगता है कि गैर सरकारी संगठनों को, कंपनियों के साथ समान अवसर प्रणाली और नीतियां बनाने के लिए काम करना चाहिए।"

ये नीतियां और प्रक्रियाएं, प्रबंधन, कर्मचारियों और संबंधित अन्य सभी के लिए स्पष्ट दिशानिर्देशों के साथ, एक नींव के रूप में काम करेंगी और एक रूपरेखा प्रदान करेंगी जिसके आधार पर हर संगठनात्मक निर्णय लिया जाएगा। यह सुनिश्चित करेगा कि विकलांग व्यक्तियों की भर्ती और उन्हें उचित आवास का प्रावधान व्यवस्थित हो और इससे भेदभाव की गुंजाइश खत्म हो जाए। संयोग से, डीओओसी ने अपनी वेबसाइट पर एक नमूना समान अवसर नीति पेश की है जिसे कंपनियां अपनी नीतियों

को बनाने में संदर्भित कर सकती हैं।

नया मंच

आज, हमे सुनने को मिलता है कि विकलांग लोग अपने रिज्यूम (Resume) के साथ रोजगार की तलाश में कंपनियों से सीधे संपर्क करते हैं। हालांकि, ऐसा बहुत कम ही होता है। क्या विकलांग लोगों को केवल अपने संभावित नियोक्ताओं के साथ जोड़ने के लिए सिर्फ इस क्षेत्र में काम करने वाले एनजीओ पर भरोसा करना चाहिए? उदाहरण के लिए, नौकारी जैसे जॉब पोर्टल्स पर विकलांग लोगों अधिक क्यों नहीं मिलते हैं? क्या यह संभावित नियोक्ताओं के प्रतिक्रिया की कमी के कारण है, या यह विकलांग लोगों के बीच जागरूकता की कमी के कारण है?

आजकल कंपनियों में भर्ती लिंक्डइन जैसे सोशल मीडिया नेटवर्किंग के माध्यम से होती है। क्या विकलांग लोग इन जगहों में नौकरी खोजने में कुशल हैं या क्या गैर सरकारी संगठनों को इस अंतरअल को भरने की कोशिश करनी चाहिए और विकलांग लोगों को भर्ती के नए तरीकों के बारे में संवेदनशील बनाना चाहिए? क्या गैर-सरकारी संगठनों को सामान्य भर्ती एजेंसियों को विकलांग लोगों के बीच मौजूद प्रतिभा और उच्च योग्यता के बारे में संवेदनशील बनाने पर भी ध्यान देना चाहिए?

कॉर्पोरेट क्षेत्र में विकलांग लोगों के पर्याप्त प्रतिनिधित्व की कमी के कारणों में से एक 'सभी के लिए एक ही उपाय' मानसिकता हो सकती है। नियोक्ता को एक विकलांग उम्मीदवार की योग्यता की तुलना एक गैर-विकलांग उम्मीदवार के साथ करने के बजाय, विकलांग उम्मीदवार की ताकत के आधार पर अधिकतम मूल्य प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, न की उसके कमजोरियों के आधार पर। आखिरकार, विविधता क्या है?

इस मुद्दे पर अक्सर एक और बात जो सुनने को मिलती है, वह यह है कि कॉरपोरेट सेक्टर में प्रवेश पाना वास्तव में बहुत बड़ी बात नहीं है। कई कॉर्पोरेट नियोक्ता न तो उचित आवास प्रदान करते हैं और न ही व्यावसायिक विकास के अवसर। समान अवसर नियोक्ता होने के कारण प्राप्त होने वाली विश्वसनीयता और मूल्य, कार्यस्थल में विविधता का

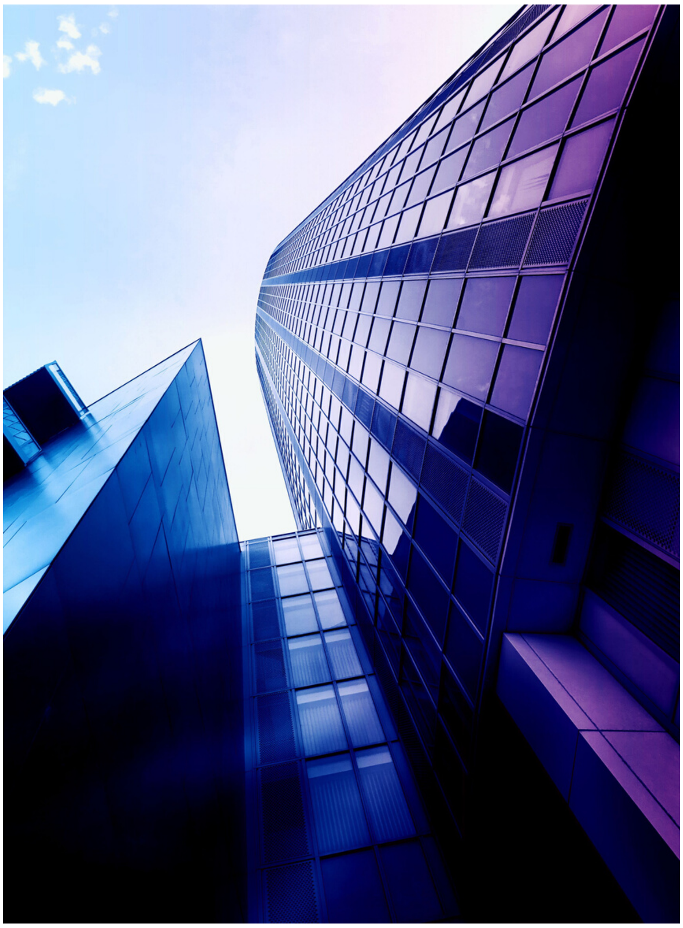

मूल्य और उचित आवास प्रदान करने की दिशा में कानूनी और संवैधानिक आदेश के बारे में इतनी संवेदनशीलता के बावजूद जब विकलांग लोगों के लिए निराशाजनक नौकरी के परिदृश्य पर चर्चा होती है, ऐसे कारक सामने आते हैं।

इस तरह के सवालों को हल करने और इनका समाधान ढूंढने से ही हम आगे बढ़ पाएंगे और उस दिन तक पहुँच पाएंगे जब गैर विकलांग लोगों के जैसे ही, विकलांग लोगों को काम पर रखा जाता है और निकाल दिया जाता है, और कॉर्पोरेट दुनिया में आगे बढ़ेंगे या पीछे रह जाएंगे।

REDINGTON

FOUNDATION

Things become special if it is created by someone special!

Redington
SEAMLESS PARTNERSHIPS

ProConnect
Integrated Logistics
a Redington company

ensure
services
solutions | support | spares

Auroma logistics
Pvt Ltd

RAJPROTIM

FOUNDATION for CSR @ REDINGTON

2nd Floor, JANKI BHAVAN, 73, SARDAR PATEL ROAD, GUINDY, CHENNAI – 600 032.

Phone: 044 - 22352034 Email: info@redingtonfoundation.org

www.redingtonfoundation.org

Visit HDFC.com

HDFC HOME LOANS
create your space

BEST-IN-CLASS PRODUCTS
FOR A VARIETY OF HOUSING NEEDS

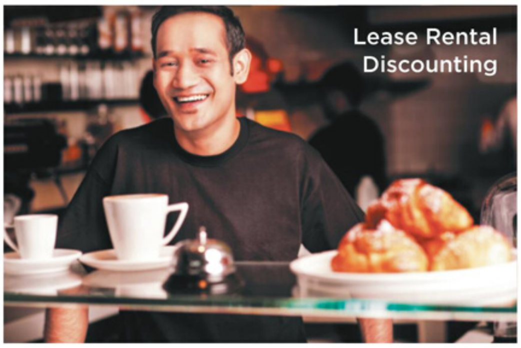

Lease Rental Discounting
Rental Income can be a key to your professional dream

Home Loan
Attractive interest rates for a home of your own

Commercial Premises Loan
Own a workplace of your choice with Commercial Premises Loans

Other HDFC Products

Plot Loans | Self Construction Loans | Top-Up Loans | Loan Against Property | Reach Loans
Home Improvement Loans | Home Extension Loans | Rural Housing Finance | NRI Loans

Call: 044 - 28599300/ 23739400

HDFC Ltd., 1st Floor, ITC Centre, 760, Anna Salai, Chennai 600 002

*All loans at the sole discretion of HDFC Ltd. For detailed terms and conditions, visit www.hdfc.com CIN:L70100MH1977PLC019916